दिसम्बर-2015 ◆ वर्ष 4 ◆ अंक 7 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

दिसम्बर-२०१५

मैं देता हूँ तुझको भोजन,
कपड़ा, रोटी और मकान।
सत्यार्थप्रकाश में ऋषि कहते हैं,
मत कर तू ऐसा अभिमान।
केवल ईश्वर सबका दाता,
इसी सत्य को तू भी मान।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ४८

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !
MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच
Garam masala
Sambhar masala
Chunky Chat masala
Shahi Paneer masala
DEGGI MIRCH
Dal Makhani masala
Kitchen King
Chana masala
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015
Website : www.mdhspices.com
ESTD. 1919

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

December- 2015

अठारहवां सत्यार्थप्रकाश महोत्सव २०१५ — १३

समाचार — २१

०४ वेद सुधा
०७ सत्यार्थप्रकाश पहेली-२३
१२ कैसे बनीं 'कैंसर सर्जन'
२५ ऋषि दयानन्द और हिन्दी साहित्य
२७ महिला होना गुनाह है क्या?
२८ स्वास्थ्य- स्वस्थ कौन?
२९ कथा सरित- पर्वत भंजक
३० सत्यार्थ पीयूष- महर्षि का राजधर्म

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	११००० रु.	$ 1000
आजीवन	१००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय	४०० रु.	$ 100
वार्षिक	१०० रु.	$ 25
एक प्रति	१० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११६
मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी
विक्रम संवत् २०७२
दयानन्दाब्द १९१

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ४ अंक - ७

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

वेद सुधा

न आवे दाम्पत्य सम्बन्धों में कटुता

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।। - ऋग्वेद १०/८५/४२

गतांक से आगे ....

पति और पत्नी के सम्बन्धों में जब कटुता का समावेश हो जाता है तब गृहस्थ का आनन्द नष्ट हो जाता है। जो गृहस्थ सुख के लिए किया जाता है, वही दुःख का कारण बन जाता है। अब हम पति और पत्नी के बिगाड़ के कारणों और उनके समाधान के विषय में विचार करते हैं।

पति और पत्नी के बिगाड़ का **सबसे पहला कारण छल कपट है।** विवाह के समय कई प्रकार के छल कपट होते हैं। कई बार लड़का स्त्री के योग्य नहीं होता। कई बार युवक युवती में कोई रोग अथवा शारीरिक दोष होता है, जिसे माता- पिता बताते नहीं हैं। विवाह के पश्चात् जब ये रहस्य खुलते हैं तो पति-पत्नी में बिगाड़ हो जाता है। अतः सम्बन्ध स्थापित करते समय इन बातों को छिपाना नहीं चाहिए।

कई बार लड़के अथवा लड़की की इच्छा के विरुद्ध माता-पिता विवाह कर देते हैं। लड़के और लड़की की इच्छा के विरुद्ध माता-पिता को उनका विवाह नहीं करना चाहिए। लड़का और लड़की एक दूसरे को देख लें, एक दूसरे को पसन्द कर लें, आकार प्रकार, डील-डौल, रूप-रंग और नख-शिख की दृष्टि से एक दूसरे की तसल्ली कर लें, तभी माता पिता को उन्हें गृहस्थ में प्रविष्ट करना चाहिए। लड़के अथवा लड़की की इच्छा न होने पर इसका परिणाम अच्छा नहीं निकलता और यह कारण जीवनभर विषाद का कारण बना रहता है।

काम वासना का अनियंत्रण भी पति-पत्नी के सम्बन्धों में बिगाड़ का कारण बनता है। पति का वासनात्मक सम्बन्ध केवल अपनी पत्नी के साथ और पत्नी का केवल अपने पति के साथ होना चाहिए। यदि विवाह के पश्चात् पति का ध्यान पर- स्त्री की ओर है और पत्नी का ध्यान पर-पुरुष की ओर है तो उनके प्रेम में वृद्धि नहीं हो सकती। वह प्रेम घटेगा और अन्त में सम्बन्ध विच्छेद तक बात पहुँचेगी। यदि पति और पत्नी दोनों ही कामवासना की दृष्टि से अनियंत्रित हैं तो बात पृथक् है अथवा यूरोपवाली स्थिति जहाँ विवाहित जीवन में कोई अंकुश ही नहीं तो बात अलग है।

परस्त्री-सम्बन्ध के अतिरिक्त मद्यपान और जुआ भी पति-पत्नी सम्बन्ध के बिगाड़ के कारण बनते हैं। शराब जहाँ मनुष्य की शारीरिक अवस्था को बिगाड़ती है वहाँ आर्थिक अवस्था को भी दुष्प्रभावित करती है। जहाँ यह पारिवारिक अशांति को बढ़ाती है, वहाँ सामाजिक अप्रतिष्ठा का कारण बनती है। यह बौद्धिक, मानसिक और आत्मिक पतन का भी कारण है। यदि पति शराबी है और अधिक मात्रा में इसका सेवन करता है तो पति-पत्नी में झगड़ा रहता है क्योंकि पति के दुर्व्यसन से परिवार में अशांति बढ़ती है, आर्थिक स्थिति बिगड़ती है और कई बार नैतिक पतन की भी संभावना रहती है। जुआ भी एक प्रकार का व्यसन है जो कई बार अर्थनाश का भी कारण बनता है। इसके पीछे यही भावना रहती है कि बिना परिश्रम ही दूसरे के धन को प्राप्त किया जाए। **अन्त में यही कहा जाएगा कि परस्त्रीगमन, मद्यपान और जुआ- ये तीनों व्यसन गृहस्थ में कलह के कारण हैं।**

पति-पत्नी के सम्बन्धों में बिगाड़ का एक कारण क्रोध है। मस्तिष्क की गर्मी के कारण वाणी असंयत हो जती है और व्यक्ति न कहने योग्य बातें भी कह जाता है। इसी कारण तनाव बढ़ जाता है। इसका यही समाधान है कि जहाँ तक हो सके क्रोध से बचा जाए और एक दूसरे के साथ मधुर वचनों का प्रयोग किया जाए। यदि पति क्रोध में हो तो पत्नी क्रोध में न आए। मस्तिष्क को हर समय जागरूक रखा जाए और जब क्रोध का आक्रमण हो तो क्रोध न करने की प्रतिज्ञा को स्मरण रखा जाए। क्रोध के कारण कठोर वचन भी वाणी से निकलते हैं। वचनों की कठोरता का प्रभाव अस्त्रों की घातकता से अधिक होता है। वचनों की कठोरता मन पर ऐसे घाव करती है कि कई बार जीवन भर वे घाव भरने में नहीं आते। अतः पति पत्नी के प्रेम को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि क्रोध पर नियंत्रण और वाणी पर संयम रखा जाए। एक दूसरे का सम्मान और एक दूसरे की

भावनाओं का आदर करते हुए गृहस्थाश्रम की यात्रा को सम्पन्न किया जाए।

पति-पत्नी के सम्बन्धों में बिगाड़ का एक कारण लोभ भी है। कई बार पति में दहेज के लिए बहुत लोभ होता है- मुझे अमुक वस्तु नहीं मिली, अमुक वस्तु मिली तो अच्छी नहीं मिलीं, सास और ससुर ने विवाह में पर्याप्त धन नहीं लगाया, इन्हीं बातों को लेकर पत्नी को ताने देते रहना अथवा उससे अपने माँ-बाप से और धन लाने के लिए आग्रह करना ये वे कारण हैं, जो पति-पत्नी में बिगाड़ उत्पन्न कर देते हैं। अतः पति को चाहिए कि जो कुछ उसे ससुराल से मिला हो उसमें सन्तुष्ट रहे। वह यह समझे कि यह विवाह हुआ है कोई व्यापार नहीं हुआ। अपनी ही कमाई पर मनुष्य को सन्तोष करना चाहिए माँगने से कुछ नहीं बनता।

पति और पत्नी के संबंधों में बिगाड़ का एक कारण अहंकार भी है। कई बार पत्नी को अहंकार होता है कि वह बड़े सम्पन्न परिवार से है। कई बार स्त्री को अपने सौन्दर्य पर बड़ा अभिमान होता है। कई बार पति को अपने परिवार के बड़प्पन और सम्पन्नता पर अत्यधिक गर्व होता है। यह अहंकार चाहे किसी प्रकार का हो, बुरा है। इसका परिणाम प्रेम के फीकेपन में प्रकट होता है। पति और पत्नी को मिथ्या अहंकार के प्रदर्शन में न पड़कर विनम्रता धारण करनी चाहिए।

पति और पत्नी का एक दूसरे की इच्छाओं को न समझना भी पति-पत्नी के सम्बन्धों में बिगाड़ का एक कारण है। पति यदि कोई इच्छा प्रकट करता है तो पत्नी को उसे स्मरण रखना चाहिए। यदि पत्नी कोई इच्छा प्रकट करती है तो पति को उसका ध्यान रखना चाहिए। पति को कार्यालय में निश्चित समय पर पहुँचना है अतः उसे निश्चित समय पर नाश्ता मिलना चाहिए। पत्नी का कर्तव्य है कि वह इस बात का ध्यान रखे। यदि पत्नी बाजार जाने के लिए कहती है अथवा कोई अन्य इच्छा प्रकट करती है तो पति का कर्तव्य है कि उसका ध्यान रखे। इस प्रकार एक दूसरे की इच्छाओं की पूर्ति करते हुए गृहस्थ की यात्रा को सम्पन्न किया जाए।

कई बार पति-पत्नी में बिगाड़ का यह भी कारण बनता है कि पति यह चाहता है कि उसकी ही हर बात मानी जाए। कई बार पत्नी यह चाहती है कि उसकी ही हर बात मानी जाए। ये दोनों ही अतिवादी दृष्टिकोण हैं। समन्वय का मार्ग ही अत्युत्तम मार्ग होता है। जीवन बिताने का ढंग यह है कि कुछ झुको, कुछ झुकाओ; कुछ सुनो, कुछ सुनाओ; कुछ दो, कुछ लो; कुछ मानो, कुछ मनवाओ। जो व्यक्ति दूसरे को ही झुकाना चाहे और स्वयं न झुके, अपनी ही सुनाता जाए और दूसरे की न सुने, जो लेना ही जानता हो देना न जानता हो, जो अपनी बात ही मनवाए और दूसरे की नहीं माने- ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता। अतः पति-पत्नी को अपनी ही बात पर अड़े न रहकर कुछ झुकने की प्रवृत्ति को अपनाकर निर्वाह करना चाहिए। जीवन की सफलता का यही मूल मंत्र है।

कई बार सन्तान का अभाव भी गृह-कलह का कारण बन जाता है। कई बार केवल लड़कियाँ उत्पन्न होना भी पति- पत्नी में कलह का कारण बन जाता है। इन दोनों अवस्थाओं में ज्ञान से काम लें। सन्तान के अभाव में व्यक्ति को चिकित्सा सहायता लेनी चाहिए। चिकित्सा के द्वारा भी सन्तान उत्पन्न न हो तो उसे कर्मफल ही समझना चाहिए। सन्तान के लिए दूसरे विवाह की बात भी उठ सकती है परन्तु सन्तान के अभाव को लेकर पति-पत्नी संबंधों में बिगाड़ ठीक नहीं ।

कई बार पति का निखट्टू होना भी पत्नी और सन्तान के लिए सन्तापदायक हो जाता है। निखट्टू व्यक्ति को गृहस्थ में दीक्षित नहीं होना चाहिए और ऐसे व्यक्ति को लड़कीवालों को लड़की देनी भी नहीं चाहिए । ऐसी अवस्था में जैसा उचित हो, वैसा किया जाए। चाहे पत्नी के भाई उसकी सहायता करें, चाहे पत्नी स्वयं कुछ कमाये। ऐसी अवस्था में स्त्री को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

पति द्वारा केवल माँ की ही बात सुनना और पत्नी की इच्छाओं की सर्वथा अवहेलना करना पति-पत्नी के सम्बन्धों में बिगाड़ का एक बहुत बड़ा कारण बनता है। कुछ परिवारों में पति केवल माँ की सुनता है। कुछ परिवारों में पति केवल पत्नी की सुनता है। ये दोनों ही अतिवादी आचरण हैं। जिन परिवारों में केवल माँ की सुनी जाती है, वहाँ पत्नी दुःख पाती है। जिन परिवारों में पति केवल पत्नी की सुनता और मानता है वहाँ माता-पिता दुःख पाते हैं। पति को चाहिए कि माता-पिता और पत्नी के अधिकारों एवं कर्तव्यों में सामन्जस्य स्थापित करे। पत्नी को पत्नी का स्थान दे और माता- पिता को माता-पिता का स्थान दे।

जो इस सन्तुलन को रख पाता है, वही सफल गृहस्थ है। जो इस सन्तुलन को नहीं रख पाता, वह असफल गृहस्थ है। जो पति माता-पिता के लिए पत्नी पर अत्याचार करता है वह अयोग्य असफल पति है तथा जो पति-पत्नी के लिए माता-पिता का अपमान करता है वह मन्दभाग्य पति है।

पतिव्रत धर्म और पत्नीव्रत धर्म के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण हमें श्रीरामचन्द्र जी व माता सीता के जीवन में मिलते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी को मर्यादा पुरुषोत्तम कहने का एक ही कारण है उन्होंने एक पत्नीव्रत को ही निभाया। सीता जी के पतिव्रत धर्म का उत्कृष्ट उदाहरण हमें उस समय मिलता है जब श्री रामचन्द्र जी वनगमन के लिए तैयार होते हैं। उन्होंने बहुत प्रयास किया कि किसी प्रकार सीताजी घर रहने के लिए राजी हो जाएँ परन्तु वे तैयार नहीं हुईं। कविवर तुलसीदास जी ने इस दृश्य का जितना उत्कृष्ट और मार्मिक चित्रण किया है संसार का कोई भी कवि पतिव्रत धर्म का इतना उत्कृष्ट चित्रण उपस्थित नहीं कर सका। पति-पत्नी का यह उत्कृष्ट प्रेम प्रत्येक गृहस्थ के लिए विशेषरूप से अनुकरणीय है।

कई बार ऐसा होता है कि पत्नी बहुत तीक्ष्ण स्वभाव की होती है अथवा पति का कुछ इस तरह का व्यवहार होता है कि वह अपने आपको उपेक्षित समझती है और उसके स्वभाव में तीक्ष्णता एवं रुक्षता आ जाती है। संसार के कतिपय महापुरुषों के जीवन में हमें इसके उदाहरण मिलते हैं। इन महापुरुषों की पत्नियों के विषय में साधिकार तो नहीं कहा जा सकता कि वे वस्तुतः तीक्ष्ण स्वभाव की थीं परन्तु इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि ये महापुरुष अपने विचारों में कुछ इस प्रकार से व्यस्त रहते थे कि उनकी पत्नियों की चिड़चिड़ाहट में वृद्धि हो गई थी अथवा उन महापुरुषों ने उनकी इच्छाओं की सर्वथा अवहेलना की, जिसके परिणामस्वरूप उनके उत्तेजित स्वभाव की उत्तेजना की और वृद्धि हो गई। ऐसे महापुरुषों ने ज्ञान के द्वारा इस खाई को पाटने का प्रत्यन किया।

कहते हैं कि यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात की पत्नी बहुत तीक्ष्ण स्वभाव की थी। उसकी पत्नी में स्वाभाविक तीक्ष्णता तो होगी ही, परन्तु सुकरात का दार्शनिक स्वभाव भी इस तीक्ष्णता की वृद्धि का कारण बना होगा, ऐसा मेरा विचार है। कहते हैं कि एक दिन सुकरात अपने मित्रों के साथ घर में आए। बहुत समय तक वे सब बैठे-बैठे दर्शन की चर्चा करते रहे। पत्नी को बहुत क्रोध आया। उसने एक बाल्टी पानी की भरी और सुकरात के सिर पर उड़ेल दी।

मित्रजन सुकरात की पत्नी की अशिष्टता पर बड़े कुपित हुए परन्तु सुकरात के मनोमस्तिष्क में कोई उत्तेजना नहीं आई। सुकरात मुस्कराए और कहने लगे हम सुनते थे कि गरजनेवाले बादल बरसा नहीं करते, परन्तु आज हमें पता चल गया कि गरजने वाले बादल भी कभी-कभी बरस पड़ते हैं।

शेख सादी की पत्नी भी संभवतः इसी स्वभाव की थीं। परस्पर कलह होता रहता होगा। यदि यह नही तो जिन परिवारों में पति-पत्नी मे परस्पर कलह रहता है संभवतः उन्हीं के विषय में उन्होंने कहा हो-

तही पाय रफ्तन बिह अज कफ्शे तंग।

बलाए सफ़र बिह कि दर ख़ाना जंग।।

अर्थात् जो जूती तंग हो उससे नंगे पाँव चलना अच्छा है। घर में हर समय लड़ाई होती रहे इससे यात्रा के कष्ट को सह लेना अच्छा है।

सन्त तुकाराम की पत्नी ने एक बार पति को गन्ने लाने के लिए कहा। पतिदेव गन्ने लाने के लिए बाजार गए। कुछ गन्ने खरीदे। आप जानते हैं कि सन्तों का हृदय मक्खन के समान कोमल होता है। जो भी मित्र एवं परिचित रास्ते में मिलता गया उसे एक-एक गन्ना भेंट करते आये। जब घर लौटे तो केवल एक गन्ना शेष रह गया। पत्नी को जाकर एक गन्ना दे दिया। पत्नी क्रोध के कारण आग बबूला हो गई। उसने आव देखा न ताव, गन्ना लेकर सन्त तुकाराम की कमर पर जोर से दे मारा। गन्ने के दो टुकड़े हो गए। सन्त तुकाराम मुस्कराए और कहने लगे प्रिये! मैं यही तो चाहता था कि गन्ने के दो टुकड़े किए जायें सो तुमने कर दिए। अब एक टुकड़ा तुम चूसो, दूसरा टुकड़ा मैं चूसता हूँ।

ज्ञान के द्वारा इन महापुरुषों ने इस खाई को पाटने का प्रयत्न किया। संभवतः इनकी पत्नियाँ भी उत्तेजित स्वभाव की रही हों। परन्तु कुछ दोष इन महापुरुषों का भी था। स्त्रियों का दृष्टिकोण प्रायः यथार्थवादी हुआ करता है, उनका दृष्टिकोण प्रायः आदर्शवादी नहीं होता। उनके सम्मुख भी जीवन का लक्ष्य होता है अपने परिवार के व्यक्तियों की शारीरिक निरोगता, उदरपूर्ति के साधनों की सुरक्षा, घर-गृहस्थ के कार्यों की सिद्धि और चल और अचल सम्पत्ति का उपार्जन , स्त्रियों के सम्मुख लक्ष्य होता है।

रूस के प्रसिद्ध विद्वान् टाल्स्टाय ने यह निश्चय कर लिया कि वह अपनी सारी सम्पत्ति निर्धनों को दे देंगे। इस पर उनकी पत्नी और बच्चे उनसे बहुत बिगड़ गए। घर में झगड़ा हो गया। घरवालों को उनके प्रति कोई सहानुभूति नहीं रही। अन्त में घर छोड़ना पड़ा। केवल उनकी छोटी बच्ची ने ही उनका साथ दिया। इसी प्रवासकाल में, दर-दर की ठोकरें खाते हुए नाना प्रकार की आर्थिक विषमताओं को झेलते हुए वे एक दिन एक छोटे से स्टेशन के बेंच पर बैठे थे कि स्टेशन मास्टर ने पहचान लिया और उनसे पूछा कि वह उनकी क्या सहायता कर सकता है? इस पर टाल्सटाय ने बड़े दुःख भरे शब्दों में कहा भाई मुझे सहायता की आवश्यकता नहीं है मैं मृत्यु की तलाश में हूँ। यह परिणाम है पति और पत्नी में प्रेम के न होने का। अतः दोनों के पारस्परिक विचार विनिमय से ही गृहस्थ की गाड़ी सुन्दर ढंग से आगे निकल सकती है। क्रमशः ....

- प्रो. रामविचार एम. ए.
(साभार- वेद संदेश)

□□□

सत्यार्थप्रकाश पहेली-२३

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए।(तृतीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

■	१	र्व	■	२	ठ	■	३ श		■	■
■	४	व	■	■	५	थि	५	■	६	न ६
७	त	७	य ७	■	■	८	र	८	■	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. वह कौन सी दिशा है जिसमें प्रथम आदित्य का संयोग हुआ है?
२. प्रमाण कितने प्रकार के होते हैं?
३. आकाश का स्वाभाविक गुण क्या है?
४. द्रव्य कितने प्रकार के होते हैं?
५. गन्ध किसका स्वाभाविक गुण है?
६. अनुमान प्रमाण कितने प्रकार का होता है?
७. ऋग्वेद के ब्राह्मण का क्या नाम है?
८. किसके न होने से कार्य नहीं हो सकता?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २१ का सही उत्तर

१. अहिंसा	२. निग्रह	३. सिद्धि	४. अजितेन्द्रिय
५. अनध्याय	६. विष		७. शुद्रभाव

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- ''अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ'' एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जनवरी २०१६

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

दान, दया और परोपकार
का यह सुन्दर परिणाम।
सबसे मिलता स्नेह-प्रेम,
और जग में होता नाम।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ २० पर देखें।

आत्म निवेदन
लॉली पॉप

'मेरी बहिन को प्रवेश नहीं मिल सका जबकि उसकी मित्र जिसके उससे दो अंक कम थे उसे प्रवेश मिल गया, क्यों?' गुजरात के अहमदाबाद शहर में पटेल समुदाय की एकत्रित पाँच लाख की भीड़ के सम्मुख यह प्रश्न एक २२ वर्ष के नौजवान ने उठाया, जिसका नाम है हार्दिक पटेल। ऐसा समझा जाता है कि हार्दिक पटेल रातों रात बड़ा नेता बन गया। पर बात यह नहीं है। **वर्षों से पटेलों के गावों व समुदायों में यह बात चल पड़ी थी कि जब गुर्जर व अन्य सक्षम समुदायों को आरक्षण मिल सकता है तो उनको क्यों नहीं?** अतः उन्होंने सीधी माँग रख दी कि या तो उन्हें भी आरक्षण मिले अथवा किसी को भी नहीं। यह माँग दिलचस्प तो है ही, इसके अन्तर्निहित मायने भी हैं। यह एक प्रकार से आरक्षण की सम्पूर्ण अवधारणा पर प्रहार करते हुए इस सिस्टम पर पुनर्विचार की भी माँग है। नेता हैरान हैं कि गुजरात की सर्वाधिक सशक्त बिरादरी जो सामाजिक तथा आर्थिक रूप से उन्नत व सक्षम है उनको आरक्षण कैसे दिया जा सकता है? लाखों की संख्या में जुटी भीड़ से हतप्रभ नेता इस मसले का क्या हल निकालेंगे यह भविष्य ही बताएगा।

वस्तुत; संविधान निर्माताओं ने इस व्यवस्था को केवल तात्कालिक उपचार के तौर पर स्वीकार किया था अतएव संविधान सभा में विरोध के बाबजूद इसे केवल १० वर्ष के लिए लागू किया था परन्तु १० वर्ष बीतते-बीतते राज नेताओं की समझ में यह अच्छी प्रकार आ गया कि दबे कुचले वर्ग की स्थिति सुधरे या न सुधरे, वे इस व्यवस्था से अपना वोट बैंक बना सकेंगे और यही कारण रहा कि जब सर्वोच्च न्यायालय ने १९५१ में मद्रास राज्य बनाम श्रीमती चम्पाकम दोराईरंजन के मुकदमे में जाति आधारित आरक्षण की व्यवस्था को संविधान के अनुच्छेद १५(१) का उल्लंघन मान इसे रद्द करने का निर्णय दिया तो सरकार ने प्रथम संविधान संशोधन के द्वारा अनुच्छेद १५(४) अंतस्थापित कर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को ही निरस्त कर दिया। **इस प्रकार से यह भी एक इतिहास बन गया की स्वतंत्र भारत के संविधान में प्रथम संशोधन इस देश की सर्वोच्च न्यायपालिका के निर्णय को निरस्त करने हेतु किया गया।**

इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि मध्य काल में अपने को उच्च जाति का समझने वालों ने जिस तरह का अपमान और व्यवहार निम्न जातियों के साथ किया वह अमानवीय था, उसकी जितनी भर्त्सना की जाय वह कम है। यह भी ठीक है कि इन दबी कुचली जातियों में आत्मविश्वास के संचरण तथा उन्हें उस स्तर तक 'अपलिफ्ट' करने के लिए कि वे मुख्य धारा में आ सकें, कुछ विशेष करने की आवश्यकता भी थी। अब उन जातियों को सहारा देने के लिए विशेष पैकेज बनाकर हर प्रकार से आर्थिक सहायता कर शिक्षणालय व आवास निशुल्क प्रदान कर, अतिरिक्त अध्ययन की विशेष निशुल्क सुविधा इत्यादि द्वारा उन्हें अन्य जातियों के समक्ष लाया जाय अथवा योग्यता पर ध्यान न देकर उन्हें योग्य पर अधिमान देकर नौकरियों, शिक्षणालयों में आरक्षण दे दिया जाय। हमारी दृष्टि में प्रथम मार्ग प्राकृतिक था जबकि दूसरा रास्ता प्रारम्भ में असरदायक लगने के बाबजूद अंततोगत्वा समाज के लिए हानिकारक ही है। **इससे एक न एक दिन आरक्षण प्राप्त एवं आरक्षण से वंचितों के मध्य वर्गसंघर्ष को जन्म देने की संभावना प्रत्यक्ष होते दीख रही है।** दूसरी ओर योग्यता के तिरस्कार से योग्यों में प्रस्फुटित कुंठा से उत्प्रेरित पलायन की प्रवृत्ति और परिणामस्वरूप 'ब्रेन ड्रेन' की राष्ट्रीय हानि। तीसरे आरक्षण की सुविधा के लाभ से सुनिश्चित सुनहरे भविष्य की गारंटी के कारण इस सुविधा भोगियों के मध्य संघर्ष एवं पुरुषार्थपूर्वक योग्यतावर्धन की इच्छा का ही समाप्त हो जाना इस कारण से मुख्य धारा से सदैव कटे रहने की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का स्थिर हो जाना।

संविधान निर्माताओं ने इस व्यवस्था की कृत्तिमता व इसके दूरगामी दुष्परिणामों को ध्यान में रख कर ही इसे १० वर्ष के लिए लागू किया था कि १० वर्ष पश्चात् इसकी समीक्षा की जा सके तथा लक्ष्य प्राप्ति के पश्चात् इसे समाप्त कर दिया जाय, अन्यथा जातीय तथा मजहबी आधार पर, अवसरों की समानता को लंघित करने वाली इस व्यवस्था को सुदीर्घ तक लागू करना संविधान निर्माताओं का आशय नहीं था, यह हम निम्न अवतरणों में देख सकते हैं।

सरदार बल्लभ भाई पटेल का यह सुनिश्चित मत था कि प्रजातंत्र के प्राकृतिक उन्नयन की दशा में सामजिक न्याय भी स्वतः

प्रतिष्ठापित हो जाएगा, इसके लिए राजनीतिक हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। उनका प्रश्न था कि दास प्रथा कैसे समाप्त हुई? क्या इसके लिए कोई विशेष नियम बनाए गए- नहीं। इसका उन्मूलन विश्वभर में राष्ट्रों की जागृत चेतना का परिणाम था। उनका विश्वास था कि जिस प्रकार अन्य सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन हुआ है प्रजातंत्र के चलते भारतीय समाज में जात्याधारित विभेद भी निश्चित समाप्त हो जाएगा।

महावीर त्यागी का कहना था कि- 'अनुसूचित जाति एक कल्पित नाम है। हाँ कुछ जातियाँ हैं जो दबी हुयी हैं, कुछ हैं जो गरीब हैं और कुछ हैं जो अस्पृश्य हैं। उनका कहना था कि डॉ. अंबेडकर अनुसूचित जाति में कैसे आ सकते हैं, क्या वे अनपढ़ हैं, क्या वे अस्पृश्य हैं, क्या उनके अन्दर अन्य कोई कमी है? मैं जात्याधारित अल्पसंख्यकवाद में विश्वास नहीं करता, इसका आधार केवल आर्थिक हो सकता है।'

डॉ. पी.एस. देशमुख का कथन था कि- 'हमारे देश में लाखों करोड़ों ऐसे लोग हैं जिनकी समस्याएँ और बाधाएँ उन लोगों से भिन्न नहीं हैं जिन्हें अनुसूचित जाति में परिगणित किया गया है। उनके लिए भी प्रावधान होना चाहिए।'

संविधान सभा में आरक्षण का प्रस्ताव अन्ततः स्वीकार किया क्योंकि यह बात भी प्रत्यक्ष थी कि निम्नवर्ण कही जाने वाली जातियों पर उच्च जात्याभिमानियों ने अमानुषिक अत्याचार किये थे और उन दबी कुचली जातियों को विशेष प्रावधान से उन्नत करना आवश्यक था। सबसे बड़ी बात जो इस प्रावधान पर सहमति बना पायी, वह यह थी कि इस व्यवथा को केवल १० वर्ष के लिए अस्थायी रूप से लागू किया जा रहा था।

संविधान सभा में अल्पसंख्यकों के आरक्षण का मुद्दा भी उठा जिसे पूरी तौर पर नकार दिया गया। गोविन्द बल्लभ पन्त ने कहा- 'आपकी सुरक्षा इसमें निहित है कि आप अपने आप को सम्पूर्णता का अविभाज्य हिस्सा बनाएँ जिससे वास्तविक सही राष्ट्र का निर्माण होता है।'

सरदार पटेल का कहना था कि- 'अगर अब भी वही प्रक्रिया दोहराई जाती है जिसकी वजह से देश का विभाजन हुआ था तो मेरा कहना है कि ऐसे लोगों की जगह पाकिस्तान है, यहाँ नहीं। यहाँ हम एक राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं और हम 'एक राष्ट्र' की नींव रख रहे हैं और जो पुनः विभाजन के निमित्त से विघटन के बीज बोना चाहते हैं उनके लिए यहाँ कोई स्थान नहीं है।'

जवाहर लाल नेहरु ने भी मजहब के आधार पर हिस्सा निर्धारित करने की व्यवस्था को बलपूर्वक नकार दिया और कहा कि- 'इस तरह की व्यवस्था में कुछ दम तब तो था जब विदेशी शासन था। यह व्यवस्था किसी निरंकुश को मजहबी खाई पैदा कर एक को दूसरे के खिलाफ इस्तेमाल का अवसर देगी।'

ताजमुल हुसैन का मत था कि भारत राज्य पंथ निरपेक्ष होगा और किसी भी नागरिक के मजहब/धर्म से सम्बन्धित मामलों के प्रति पूर्णतः उदासीन होगा अतएव इसका कोई औचित्य नहीं है।

संयुक्त प्रांत से मुस्लिम सदस्य बेगम अजीज रसूल ने कहा कि- 'उनके मत में आरक्षण अपने आप में विनष्ट करने वाला आत्मघाती हथियार है जो अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यकों से सदैव लिए अलग कर देगा।'

ताजमुल हुसैन ने तो यहाँ तक कहा कि- 'अल्पसंख्यक शब्द अंग्रेजों की देन है। अब अंग्रेज चले गए तो यह अल्पसंख्यक शब्द भी उनके साथ चला जाना चाहिए। अपने शब्दकोष में से अल्पसंख्यक शब्द निकाल दीजिये। भारत में कोई अल्पसंख्यक नहीं है। मैं कहना चाहता हूँ कि कोई भी ऐसा सुसभ्य देश नहीं है जहाँ संसदीय प्रकार का प्रजातंत्र सुस्थापित हो, वहा सीटों का आरक्षण हो। हम राष्ट्र में विलय होना चाहते हैं।'

इस प्रकार २५ तथा २६ मई १९४९ को संविधान सभा में हुए इस दो दिवसीय विचार विमर्श ने स्वतन्त्र भारत के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण जगह बनाई है जब हमारे संविधान के निर्माताओं ने अल्पसंख्यकों के लिए किसी भी प्रकार के आरक्षण को

नकार दिया, यहाँ तक कि संविधान सभा के मुस्लिम सदस्यों में से अधिकांश ने स्पष्ट कहा कि अल्पसंख्यकों के हित में ही सब प्रकार के आरक्षण समाप्त होने चाहिए। सामजिक रूप से पिछड़े लोगों के उत्थान के लिए जात्याधारित आरक्षण भी अत्यंत संकोच के बाद केवल १० वर्ष के लिए लागू किया गया।

शीघ्र ही यह मुद्दा वोट बैंक की चाशनी बन गया जिसका रस सभी दल चखने को लालायित होते रहे हैं। वी.पी सिंह ने १९८० से ठन्डे बस्ते में पड़ी मंडल कमीशन की रिपोर्ट को सरकारी नौकरियों में लागू कर आरक्षण का दायरा बढ़ाकर ४९.५% कर दिया। अब तो आरक्षण की गंगा ऐसी बही कि हर कोई दल इसमें डुबकी लगाने को समुत्सुक था। शिक्षा तथा सरकारी नौकरियों में आरक्षण के पश्चात १९७९ में संविधान संशोधन के द्वारा अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जातियों के लिए पदोन्नति में भी आरक्षण कर दिया गया। इसमें एक तुर्रा यह भी था कि आरक्षण वाले सामान्य वर्ग में

भी कम्पीट कर सकते हैं।

अब देश में स्थिति यह बन गयी कि जिन जातियों को सक्षम मानकर आरक्षण नहीं दिया गया उसमें अत्यन्त वंचित परिवार में पैदा बच्चा आरक्षण सुख से वंचित, हर स्तर पर संघर्ष करता हुआ, आरक्षित वर्ग के सहपाठी से काफी ज्यादा अंक लाने पर भी नौकरी से वंचित रहा तो वर्षों से एक पद पर कार्य कर रहे व्यक्ति का अधीनस्थ कुछ ही वर्षों में उसे लांघकर उसका अफसर बन गया। यह स्थित प्राकृतिक न्याय के विरुद्ध तो थी ही 'अवसर की समानता की संविधान प्रदत्त गारंटी' की भी हवा निकाल रही थी। कितने आन्दोलन हुए, कितने नौनिहालों ने अपने को जला कर भस्म कर दिया, पर सब व्यर्थ। राजनेताओं में संवेदनशीलता तलाशना तो मृगमरीचिका के सामान है, हाँ इस देश की न्याय व्यवस्था ने इस असमानता के दर्द को समझा। पर हर उस निर्णय को जो राजनेताओं ने अपनी चुनावी संभावनाओं को विपरीत पाया, संविधान संशोधन के अस्त्र से प्रभावहीन कर दिया गया।

माननीय उच्च न्यायालय ने १९६३ में एम.आर.बालाजी बनाम मैसूर में आरक्षण की अधिकतम सीमा ५०% निर्धारित कर दी। इस सीमा का अतिक्रमण करने का प्रयास किया जाता रहा है और किया जाता रहेगा इसमें संदेह नहीं।

प्रलोभन सबसे बड़ा आकर्षण सिद्ध हो रहा है। कल तक जो जातियाँ अपने को उच्च सिद्ध करने में न जाने क्या-क्या करतीं थीं, वे आज अपने को निम्न व पिछड़ा सिद्ध करने पर आमादा हैं। राजस्थान में गुर्जर समुदाय, हरियाणा में जाट समुदाय तथा अब गुजरात में पटेल समुदाय इसके ताजा उदाहरण हैं। माननीय उच्च न्यायालय ने ५०% की जो टोपी पहनायी थी अब उसमे उभार नजर आ रहे हैं। ये उभार और वृहद् होंगे आज की राजनीति तो यही संकेत कर रही है। राजस्थान में यह प्रतिशत ६८% हो गया है। जिसे सम्भवतः न्यायपालिका रद्द कर दे।

जब देश का संविधान लागू हुआ था उस समय २७.५% को पिछड़ा माना गया था। आज ५४ वर्ष पश्चात् यह आरक्षण उनकी संख्या में कमी के बजाय बढ़ोतरी कर रहा है। यह उत्थान का कैसा उपाय है जो विपरीत दिशा में गति कर रहा है? एक बात और जो दबे, कुचले, पिछड़े थे क्या वास्तव में उनकी स्थिति में परिवर्तन आया है? शायद नहीं। यह सच है कि आरक्षण की सुविधा से ऐसे दलित समुदाय में से कुछ राजनेता बन गए, कुछ मंत्री बन गए, कुछ अफसर बन गए पर ऐसी उन्नति उस तबके के प्रत्येक सदस्य के हिस्से में आना तो दूर केवल कुछ परिवारों तक सीमित हो गयी। यही कारण है कि एक परिवार में तो आई.पी.एस., आई.ए.एस. भरे पड़े हैं तो दूसरी ओर बहुसंख्यक परिवार वहीं खड़े हैं जहाँ ६५ वर्ष पूर्व थे। इसका मुख्य कारण है- एक परिवार के समृद्ध हो जाने पर उसे आरक्षण की परिधि से बाहर करने की कोई व्यवस्था नहीं है। यह संविधान निर्माताओं की भावना के विपरीत होने के साथ प्राकृतिक न्याय के भी विपरीत है। दो परिवारों की तुलना कीजिए। एक सवर्ण जाति का है दूसरा ओ.बी.सी. से है। दोनों की आर्थिक स्थिति समान। एक आरक्षण के घोड़े पर सवार होकर सरकारी नौकरी प्राप्त कर लेता है, दूसरा ऐसा नहीं कर पाता। पहले के घर में अब अर्थ-सुविधा होने से समृद्धि का प्रवेश होता है उसका सामर्थ्य बढ़ता है और आज के जमाने में स्तर का मूल्यांकन अर्थ से होता है अतः उसका दबदबा रहता है। दूसरा वहीं का वहीं रहता है। यहाँ तक तो ठीक भी हो सकता है। परन्तु दूसरी पीढ़ी की बारी आने पर भी पहला पुनः सुविधा प्राप्त करता है जबकि अब वह वंचित नहीं, समर्थ है और उसका सवर्ण पड़ोसी और वंचित हो गया परन्तु उसका बेटा भी पीछे रह गया। जबकि उसके बेटे ने पहिले के बेटे के मुकाबिले अंक भी ज्यादा प्राप्त किये थे। **असंतोष इस अंतहीन क्रम तक प्राप्त आरक्षण से उपजता है।**

आज कोई भी राजनीतिक दल मन में इसे अस्वभाविक तथा गलत समझते हुए भी इस व्यवस्था के विपरीत कुछ नहीं करेगा यह सुनिश्चित है बल्कि वह हर संभव प्रयास करेगा कि इस का विस्तार अन्य वर्गों तक कर अपना वोट बैंक मजबूत करें। इसी क्रम में आरक्षण के दायरे को सरकारी नौकरियों से बाहर ले जाकर प्राइवेट कालेजों को भी आरक्षण की जद में लाने के प्रयास हैं।

२००५ में माननीय उच्च न्यायालय की सात सदस्यीय पूर्ण पीठ ने सर्वसम्मति से पी.ए. इनामदार बनाम महाराष्ट्र राज्य के मामले में व्यवस्था दी कि आरक्षण की व्यवस्था को अल्पसंख्यक अथवा गैर अल्पसंख्यक अननुदानित शिक्षण संस्थाओं में लागू नही किया जा सकता है जिसे ९३वें संविधान संशोधन के द्वारा प्रभावहीन बना दिया गया।

इस संक्षिप्त विवरण से यह स्पष्ट है कि सीमित अवधि तक आरक्षण की व्यवस्था लागू कर वंचितों के उत्थान की सदाशयता बहुत पीछे छूट गयी है। वंचित आज भी वंचित हैं अतः यह भी नहीं कहा जा सकता है कि यह व्यवस्था अपने उद्देश्य को समग्र रूप में प्राप्त कर सकी है। पर इसका यथार्थ मूल्यांकन कोई भी पार्टी नहीं करेगी क्योंकि उन्हें वंचितों की नहीं अपनी कुर्सी की चिंता है। अगर किसी ने जातिगत आरक्षण के पुनर्मूल्यांकन की क्षीण सी भी आशा पाल रखी हो तो बिहार में बी. जे. पी. के पराभव के बाद

उस आशा को तुरन्त त्याग देना चाहिए। श्री मोहन भागवत के बयान को बिहार में बी. जे. पी. की हार के कारणों में से एक समझा जा रहा है।

हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। वैदिक समरसता पूर्ण वर्णव्यवस्था के स्थान पर मानवीय मूल्यों को शर्मसार करने वाली जाति व्यवस्था के चलते जो अमानवीय अत्याचार तथाकथित निम्न जातियों पर किये गए उसका निवारण होना ही था, हुआ। वंचितों को उन्नत करने की दिशा में प्रयास किया जाना कोई बुरी बात नहीं है पर इसकी अति कहीं उलटी दिशा में उसी प्राचीन वैषम्य को जन्म न दे दे यह ध्यान रखना होगा। आज आरक्षण के विस्तार और यथार्थ धरातल पर इसकी समीक्षा में राजनीतिक दलों की कोई रुचि न होने से लगता है कि पुनः वर्ग-विषमता पनप रही है। अब इसकी धारा पहले से विपरीत है। पर असंतोष तो इससे भी फैलेगा। समृद्ध पटेलों द्वारा २३ वर्ष के नवयुवक के नेतृत्व में जन्मा यह नया आन्दोलन संकेत दे रहा है। राष्ट्र हित में इसके कारणों पर चिंतन भी होना चाहिए तथा निवारण के ईमानदार प्रयास भी। गुजरात सरकार द्वारा जरूरतमन्द युवाओं के लिए १००० करोड़ रुपये के विशेष पैकेज को पटेलों के एक ग्रुप ने लॉलीपॉप कहकर न केवल ठुकरा दिया है वरन् लॉलीपॉप के सांकेतिक वितरण से

अपने आन्दोलन को तेज करने में लग गया है। पटेलों ने पैकेज को लॉलीपॉप माना है जबकि हकीकत यह है **'आरक्षण' आज की तारीख में सबसे बड़ा लॉलीपॉप है**। जिसे जीतने की हसरत रखने वाला हर राजनेता अधिकतर वोटरों तक वितरित करने की जुगाड़ में लगा है। बिहार में चुनाव परिणाम उसमें असाधारण गति प्रदान करेंगे स्पष्ट है।

पर एक तथ्य और स्पष्ट है। अगर आरक्षण की अधिकतम सीमा निर्धारित बनी रहती है तो इस लॉलीपॉप के नवीन उपभोक्ताओं का पुराने तृप्त समुदायों द्वारा विरोध होगा। पूर्व में यह हो चुका है, अभी हो रहा है आगे और तीव्र होगा। इस प्रकार वर्ग संघर्ष की स्थिति आनी अवश्यम्भावी प्रतीत होती है। अतः राष्ट्रहित एवं स्व-हित में से किसी एक को राष्ट्र के नीति निर्माताओं को चुनना ही होगा।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

❑❑❑

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

• **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

• सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

☞ न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
☞ जनवरी १६ से दिसम्बर १६ तक सत्यार्थ सौरभ के सभी १२ अंकों में प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश पहेलियों को हल करें।
☞ हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
☞ अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
☞ लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
☞ ऊपरलिखित उपबन्धों के अधीन पूरे १२ महीने शुद्ध हल भेजने वालों में से एक विजेता का चयन लॉटरी के द्वारा होगा।
☞ विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
☞ आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
☞ विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

सब्जी बेचने से "कैंसर सर्जन" बनने तक की यात्रा

कौन विश्वास कर सकता था कि सन् १९५५ में एक अत्यन्त मामूली परिवार में जन्मी गुलबर्गा शहर के गाजीपुर में नातीकेरी स्लम क्षेत्र में रहने वाली एक भाई व छह बहिनों युक्त परिवार में सबसे बड़ी, अपनी माँ को सब्जी बेचने में सहायता करने वाली एक मामूली सी लड़की देश की सुप्रसिद्ध कैंसर सर्जन बन जायेगी।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में प्रारब्ध और पुरुषार्थ की चर्चा करते हुए पुरुषार्थ को प्रारब्ध के ऊपर अधिमान दिया है। इसी बात को सही साबित किया विजयलक्ष्मी देशमाने ने, जिसके पिता की उत्कट इच्छा थी कि वह एक डॉक्टर बने। वे चाहते थे कि उनकी सभी छह बेटियाँ व एक बेटा शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ चढ़कर भाग लेते हुए समाज में अपना स्थान बनायें। एक मामूली व्यक्ति के लिए जिसके पास अपना कोई सुस्थापित धन्धा न हो उसकी यह सोच भी आश्चर्यजनक थी। पर कहते हैं सफलता भी वही प्राप्त करते हैं जो खुली आँखों से सपना देखते हैं और उस सपने को साकार करने में पूरी तरह जुट जाते हैं। बाबूराव देशमाने जिन्हें कि बाद में लोग स्नेह से देशमान्य भी कहते थे, ने भी एक मुश्किल अवसर पर बहुत बड़ा निर्णय लिया। विजयलक्ष्मी प्रारम्भ से ही पढ़ने में अग्रणी थी परन्तु जब १२वीं कक्षा उत्तम अंकों से उत्तीर्ण की तो उसे अचानक महसूस हुआ कि उसकी उड़ान अब खत्म ही है क्योंकि मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के लिए देशमाने परिवार के पास पैसा नहीं था। स्वयं डॉ. विजयलक्ष्मी बताती हैं कि एक अमावस्या की रात्रि में उसकी माँ ने अपना इकलौता आभूषण जो कि उसका मंगलसूत्र था वह उतार कर अपने पति के हाथों में रख दिया ताकि उसे गिरवी रखकर या बेचकर विजयलक्ष्मी की मेडिकल की पढ़ाई का खर्चा निकाला जा सके और इस प्रकार विजयलक्ष्मी का प्रवेश कर्नाटक मेडीकल कॉलेज हुबली में हुआ। इसके बाद भाषा की समस्या उपस्थित हुई जिस परिवेश में विजयलक्ष्मी पली बढ़ी थीं वहाँ अंग्रेजी को जानना और उस माध्यम से पढ़ाई करना दूर की वस्तु थी। विजयलक्ष्मी अपने प्रथम वर्ष में इस कारण अनुत्तीर्ण हो गई क्योंकि वह अंग्रेजी भाषा के माध्यम से न तो समुचित पढ़ाई कर पाई न अंग्रेजी के प्रश्नपत्र को ठीक तरह से समझ पाई। परन्तु उसे तो अपने पिता के सपनों को साकार करना था उसने कठोर परिश्रम के द्वारा भाषा की समस्या पर विजय प्राप्त की और उसके बाद उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। सन् १९८० में एमबीबीएस करने के बाद उन्होंने १९८३ में बरेली से एमएस किया। जिस परिवेश में एक जून के खाने का जुगाड़ करना भी एक चुनौती था वहाँ से एक बालिका निकली और उसने न केवल ऊँचाइयों को स्पर्श किया वरन् अपनी क्षमता को एक कैंसर सर्जन के रूप में उपयोग करते हुए गरीबों की सेवा में अपने आपको झोंक दिया। अपनी सर्जिकल स्किल के सहारे अनेक जीवन बचाने वाली विजयलक्ष्मी कर्नाटक कैन्सर सोसायटी की उपाध्यक्ष भी रही हैं। विजयलक्ष्मी ने आज साठ वर्ष की आयु में किदवई इन्सटीट्यूट ऑफ ओनकॉलोजी, बेंगलूर मेडिकल कॉलेज की कैंसर विभाग की विभागाध्यक्ष के पद से अवकाश प्राप्त किया है परन्तु उनमें न उत्साह की कमी है न ऊर्जा की और वे अपना आगामी जीवन भी कैंसर विशेषज्ञ के रूप में समाज के अंतिम आदमी तक पहुँचकर उसे राहत देने का मानस रखती हैं। विजयलक्ष्मी को राष्ट्रीय-रत्न, शिरोमणि राष्ट्रीय पुरस्कार, अन्तर्राष्ट्रीय स्टडी सर्किल का स्वर्ण पुरस्कार, अमेरिकन बायोग्राफीकल इन्सटीट्यूट द्वारा वोमेन ऑफ ईयर एवार्ड कलश, देवी तथा राज्योत्सव जैसे पुरस्कारों से समय-समय पर सम्मानित किया गया है। सही कहा है कि व्यक्ति अगर कोशिश करे तो क्या नहीं कर सकता। इस बात को चरितार्थ विजयलक्ष्मी ने किया।

विपरीत परिस्थितियों में, सफलता के शिखर को चूमने की यह कहानी अन्यों को भी प्रेरणा दे सकेगी इसी आशा के साथ यहाँ प्रस्तुत की जा रही है।

❑❑❑

अठारहवां सत्यार्थप्रकाश महोत्सव

31 अक्टूबर से 02 नवम्बर 2015

संक्षिप्त विवरण

अठारहवां सत्यार्थप्रकाश महोत्सव

मूर्धन्य संन्यासियों, उद्भट वक्ताओं व गुणग्राहक श्रोताओं का संगम

- डॉ. नरेन्द्र सनाढ्य

दिनांक ३१ अक्टूबर को सत्यार्थप्रकाश समारोह का शुभारम्भ आचार्य वेदप्रिय के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ, जिसमें आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज की प्राचार्या डॉ. सूर्याजी चतुर्वेदा एवं ब्रह्मचारिणी स्नेहा आर्या द्वारा सुमधुर स्वर में मंत्रों का पाठ किया गया। यज्ञोपरान्त सुमेरपुर से पधारे भजनोपदेशक केशवदेव जी ने भजन प्रस्तुत किये। सीताबाड़ी से आये आचार्य वेदप्रिय जी शास्त्री ने प्रवचन करते हुए विधिवत् वैदिक शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए श्रद्धा को सबसे महत्वपूर्ण बताया। साथ ही उन्होंने हमारे जीवन में यज्ञ के महत्व को विस्तार से समझाया।

धार्मिक आडम्बरों का भाग्य खुलने का कोई संबंध नहीं, सिर्फ अन्धविश्वास: आचार्य हरिप्रसाद

अंधविश्वास, धार्मिक आडम्बर और मूर्तिपूजा को आड़े हाथ लेते हुए नोएडा से आए आचार्य हरिप्रसाद ने कहा कि इनका और भाग्य खुल जाने का कोई संबंध नहीं होता। उन्होंने समझाया कि जैसा दूरी और उम्र में कोई संबंध नहीं, वैसे ही दान देने और भाग्य खुलने में कोई संबंध नहीं होता। अंधविश्वास निर्मूलन सत्र को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जब दयानन्द सरस्वती ने अंधविश्वास और धार्मिक आडम्बर के खिलाफ आवाज उठाई थी तो उन्हें अपमानित किया, पत्थर मारे और जहर पिलाया था। परन्तु वे बौद्धिक सर्वनाश के मूल कारण अन्धविश्वास के निवारणार्थ प्रयत्न करते ही रहे। पुराणों में ऐसी कई बातें लिखी हैं जो अवैज्ञानिक हैं। बाइबिल और कुरान तो ऐसी बातों के भंडार हैं। अंधविश्वास से किसी को कोई फायदा नहीं होने वाला।

ध्वजारोहण

अजमेर से पधारीं साध्वी उत्तमायति जी के कर कमलों से ओ३म् पताका फहरायी गयी एवं इन्द्रदेव जी पीयूष के साथ

समवेत स्वर में ध्वज गीत गाया गया। इस समय ध्वजारोहण स्थल का दृश्य विमोहक था। 'ओ३म्-ध्वजा' को सदैव लहराते रहने के संकल्प से प्रस्फुटित भावनाएँ रसधार बनकर बह रही थीं। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

वेद सम्मेलन

प्रातः १०.०० बजे से दोपहर १.०० बजे तक के सत्र में वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया। दयानन्द विद्यापीठ, आबूरोड से आये स्वामी शारदानन्द जी सरस्वती ने सम्मेलन की अध्यक्षता की। मंच पर अजमेर के भूतपूर्व सांसद रासासिंह जी रावत, आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज की प्राचार्या डॉ. सूर्याजी चतुर्वेदा, नई दिल्ली से आये अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान् वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय, कोलकाता से पधारे भजनोपदेशक कैलाश जी कर्मठ का प्रमुख सान्निध्य रहा। प्रारम्भ में दयानन्द कन्या विद्यालय, हिरणमगरी, से.४, उदयपुर की बालिकाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर के मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। भजनोपदेशक श्री कैलाश जी कर्मठ ने अपने सुमधुर कण्ठ से भजनों की आकर्षक प्रस्तुति दी।

रासासिंह जी रावत ने वेद की प्राचीनता एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में ऋषि दयानन्द सरस्वती द्वारा मानव जाति पर किये गये उपकारों पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं ऋषि के प्रति आभार स्वरूप हमें कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया। आर्य-इतिहास में महाराणा सज्जन सिंह जी का स्थान स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। उन्हीं के वंशज, लोकप्रिय युवा हृदय सम्राट महाराज कुमार लक्ष्यराज सिंह ने इस अवसर पर पधारकर कार्यक्रम की गरिमा में वृद्धि की। न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य ने महाराज कुमार श्री लक्ष्यराज सिंह जी मेवाड़ का स्वागत करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती एव महाराणा सज्जन सिंह जी के सम्बन्धों तथा स्वामी जी के निर्देशों पर चलकर मेवाड़ को आर्य परम्परा का वाहक बनाने के महाराणा के संकल्प पर प्रकाश डाला। महाराज कुमार श्री लक्ष्यराज सिंह जी मेवाड़ ने अपने पूर्वजों की परम्परा को निभाने का वादा करते हुए न्यास के लिए हमेशा उपलब्ध रहने का आश्वासन दिया। गुरुकुल शिवगंज की प्राचार्या डॉ. सूर्याजी चतुर्वेदा ने वेदों में दी गयी व्यावहारिक शिक्षा को

विस्तार से समझाया। स्वामी शारदानन्द जी सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में ज्ञान के व्यावहारिक पक्ष के महत्व को परिभाषित करते हुए विस्तृत व्याख्या की। इस सत्र का संचालन नोएडा से आये आचार्य हरिप्रसाद जी ने किया।

श्रीमती ब्रजलता आर्या स्मृति मल्टीमीडिया सेन्टर का लोकार्पण

दिनांक ३१ अक्टूबर २०१५ को दोपहर तीन बजे 'श्रीमती ब्रजलता आर्या स्मृति मल्टीमीडीया सेन्टर' का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन के इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमद् दयानन्द

सत्यार्थप्रकाश न्यास के न्यासी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल थे एवं अध्यक्षता श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के संस्थापक न्यासी एवं संसद सदस्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने की। इस दौरान राजीव गाँधी जनजाति विश्वविद्यालय, उदयपुर के कुलपति श्री टी. सी. डामोर एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य का सान्निध्य प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संयोजन श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने किया।

युवा पीढ़ी को प्राचीन भारतीय गौरव से परिचित कराने के अपने प्रयास के क्रम में भारतीय महापुरुषों के जीवन चरित्र पर बने चलचित्र, यहाँ आने वाले सहस्रों दर्शकों तथा छात्रों के समक्ष प्रदर्शित किए जायेंगे। श्री अशोक आर्य ने बताया कि उदयपुर के २०० से अधिक विद्यालयों को इस प्रकल्प से जोड़ने की सुदृढ़ योजना बनायी जा रही है। गत वर्ष २५००० पर्यटकों के मुकाबले इस वर्ष ३०-३५ हजार दर्शकों के आने की संभावना है जो इस चित्ताकर्षक व प्रेरक प्रकल्प का लाभ ले सकेंगे। आर्य ने यह भी बताया कि पावर पाइन्ट प्रजेन्टेशन के माध्यम से सत्यार्थप्रकाश की कक्षाएँ भी लगायी जावेंगी। इस प्रकल्प हेतु दानवीर श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने दो लाख की राशि प्रदान की। जिसका करतल ध्वनि से स्वागत किया गया।

अन्धविश्वास निर्मूलन सम्मेलन

दिन के अंतिम सत्र में सायं ४.०० से ७.०० बजे के दौरान 'अंधविश्वास निर्मूलन सम्मेलन' का आयोजन हुआ। उक्त

दयानन्द सबसे बड़े वैज्ञानिकः- आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

दिल्ली निवासी आर्य समाज के उद्भट विद्वान् वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि खुद को ब्रह्मा बताकर पूजन कराने वाले लोग समाज के सबसे बड़े दुश्मन होते हैं। वेद को जिस तरह दयानन्द ने वैज्ञानिक रूप में परिभाषित किया, निःसंदेह कहा जा सकता है वे सबसे बड़े वैज्ञानिक हुए। दयानन्द के लिए विज्ञान व धर्म पृथक् पृथक नहीं हैं। वे हाथ में हाथ डालकर चलते हैं। वेद में समस्त विज्ञान बीजरूप उपस्थित है। सृष्टि के रहस्य का उद्घाटन केवल वेद से और वह भी दयानन्द की भाष्यशैली का अवलम्बन करने से हो सकता है।

सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी आर्येशानन्द जी सरस्वती ने की। उदयपुर के सांसद श्री अर्जुनलाल मीणा प्रमुख अतिथि थे। अर्जुनलाल मीणा ने इस प्रकार के आयोजनों की आवश्यकता पर जोर दिया एवं न्यास को शुभकामनाएँ एवं बधाई दी साथ ही 'आर्यावर्त्त' चित्र दीर्घा के लिए सांसद निधि से धन दिलाने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर प्रमुख वक्ताओं में आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि अपने आपको अंधविश्वास से दूर रखना ही पर्याप्त नहीं है अपितु हमारे आसपास फैले हुए अंधविश्वास को दूर करने का ईमानदार प्रयास बहुत जरुरी है। आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने बढ़ते हुए अंधविश्वास के लिए हम आर्यजनों की निष्क्रियता को भी जिम्मेदार माना और अपील की कि हर आर्यजन अपनी सक्रियता बढ़ाते हुए आर्यसमाज की रगों में पुनः रक्तपोषण करें। श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने कहा कि महर्षि दयानन्द के समय में जितना अंधविश्वास व पाखंड था उससे कहीं अधिक अंधविश्वास व पाखंड आज है, जो चिंता का विषय है। बढ़ते अंधविश्वास को नियंत्रित करना आज की महती आवश्यकता है। इसके लिए मीडिया एव चैनलों को साहस दिखाना पड़ेगा और हमें अपने घर से ही शुरुआत करनी होगी। हम सुधरेंगे जग सुधरेगा। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के न्यासी एवं आर्य समाज आबूरोड के प्रधान श्री मोतीलाल आर्य ने कहा कि केवल मनुष्य का सिर ही उठा रहता है। इसका कारण यह है कि मनुष्य को ही परमात्मा ने बुद्धि प्रदान की है। अंधविश्वास का कारण मनुष्य द्वारा कोई काम करने से पूर्व बुद्धि का उपयोग न करना है। अंधानुकरण की प्रवृत्ति ही बढ़ते हुए अंधविश्वास

का प्रमुख कारण है। अनुकरण की यह प्रवृत्ति छोड़कर बुद्धि का उपयोग करने पर ही अंधविश्वास पर नियंत्रण किया जा सकता है।

स्वामी आर्येशानन्द जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में समाज में फैले हुए प्रमुख अंधविश्वासों को उदाहरण सहित प्रस्तुत करते हुए उनके निराकरण का व्यवहारिक पक्ष रखा। कार्यक्रम के अंत में डी.ए.वी.स्कूल, उदयपुर एवं महर्षि दयानन्द विद्यालय, फतेहनगर के बालक-बालिकाओं द्वारा अंधविश्वास पर चोट करने वाली दो लघुनाटिकाएँ प्रस्तुत की गयीं जिनकी उपस्थित समूह ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल ने सभी प्रतिभागी बच्चों को नकद पुरस्कार प्रदान किए।

पर्यटन तथा संस्कृति-ज्ञान का समन्वय कर आर्ष विचारों का सम्प्रेषण न्यास का मुख्य प्रयास है। कटारिया जी ने दर्शक दीर्घा को स्तुत्य प्रयास बताया।

राष्ट्र निर्माण सम्मेलन

समारोह के दूसरे दिन प्रातः काल सीकर से पधारे स्वामी

सत्यार्थ प्रकाश से जागी आजदी की अलख: स्वामी ऋतस्पति सरस्वती

स्वामी ऋतस्पति सरस्वती ने कहा कि संसार में महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुष कभी कभार ही होते हैं। उनके रचित सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा आर्य समाजों को करनी चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश के मूल स्वरूप से छेड़छाड़ नहीं होनी चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश की रचना उदयपुर में होना अभूतपूर्व है। आजादी की अलख में जुटे महापुरुष सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरित थे। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए प्रसिद्ध विद्वान् डॉ.सोमदेवशास्त्री ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नवलखा महल की पावन धरा पर ही बैठ सत्यार्थ प्रकाश की रचना सम्पूर्ण की, जिसमें ३७७ ग्रन्थों के १५४२ प्रमाण प्रस्तुत किए। इसी से प्रेरित होकर गुरुदत्त, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, भगतसिंह और वीर सावरकर जैसे महापुरुषों ने स्वतंत्रता की अलख जगा दी। इस अवसर पर वक्ता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आजादी आन्दोलन के समय जेल में बंद क्रान्तिकारियों में ८० प्रतिशत आर्य समाजी थे, जिनके तकियों के नीचे सत्यार्थ प्रकाश रहता था। सुभाषचन्द्र बोस से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन में भी इसका असर रहा।

सम्मेलन का सफल संचालन श्रीमती नीता गर्ग ने किया।

समारोह के दूसरे दिन प्रातः आचार्य वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय के नेतृत्व व निर्देशन में यज्ञ का आयोजन हुआ तथा आचार्य श्री का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। देहरादून के भजनोपदेशक श्री सत्यपाल सरल ने भजन प्रस्तुत किये।

राजस्थान के गृहमंत्री गुलाब चन्द कटारिया ने किया 'आर्यावर्त्त' दीर्घा का अवलोकन

राजस्थान के गृहमंत्री माननीय गुलाबचन्द कटारिया तथा महापौर श्री चन्द्रसिंह कोठारी के नवलखा महल पधारने पर स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती ने उनका उपरना ओढ़ा कर

स्वागत किया। श्री अशोक आर्य एवं न्यास के उप मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने बताया कि गत वर्ष में २५००० पर्यटकों ने इस दीर्घा का अवलोकन किया। आर्य ने बताया कि

सुमेधानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में 'राष्ट्र निर्माण सम्मेलन' का आयोजन हुआ। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज के योगदान का वर्णन किया। राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा पद्धति में बदलाव को आवश्यक बताया। विकसित देशों में बच्चों को यह सिखाया जाता है कि देश को सर्वश्रेष्ठ बनाना है। हमारे देश में बच्चों में उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाने व वहाँ पर ही नौकरी करने की भावना विकसित की जाती है। इस नजरिये में परिवर्तन के लिए आर्य समाज को और अधिक सक्रिय व संगठित होना पडेगा। प्रख्यात् वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि राष्ट्र निर्माण की नींव महर्षि दयानन्द सरस्वती ने रखी थी। आजादी के बाद जो एक जुट भारत बना वह आर्यसमाज के सहयोग से ही बन पाया है। राष्ट्र निर्माण की दिशा में वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना ही एकमात्र कदम है। वेदों की शिक्षा का अनुसरण करके ही राष्ट्र निर्माण किया जा सकता है। इसके लिए राष्ट्र के प्रति हमेशा जागरुक रहने की आवश्यकता है। उद्‌भट वक्ता एवं प्रसिद्ध आर्य नेता श्री सत्यव्रत सामवेदी ने राष्ट्र निर्माण सम्मेलन को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि आजादी का बिगुल सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही बजाया था। देश को सांस्कृतिक प्रदूषण व मदिरा से मुक्त करना जरुरी है। जब तक सत्यार्थप्रकाश एवं वेदों की उपेक्षा होती रहेगी तब तक इस

देश का भला नहीं हो सकता।

हैदराबाद से आये आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो. विठ्ठलराव जी ने हैदराबाद आन्दोलन का हवाला देते हुए देश के निर्माण में हैदराबाद के निवासियों के बलिदान का वर्णन किया। श्री वेदप्रिय शास्त्री ने कहा कि हमारा स्वाभिमान हमारा चरित्र मर चुका है। अतीत के गुणगान से कुछ नहीं होगा। राष्ट्र निर्माण के लिए हमें हमारा वर्तमान सुधारना होगा। भजनोपदेशक कैलाश कर्मठ एवं अमर सिंह ने देश भक्ति के गीत व भजन प्रस्तुत किये। सम्मेलन का संयोजन आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार के प्रधान श्री ओ. पी. वर्मा ने किया।

महिला सम्मेलन

दिनांक २ नवम्बर २०१५ को सायं ४.०० बजे से ७.०० बजे तक साध्वी उत्तमा यति जी की अध्यक्षता में महिला सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन के मुख्य अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्रपदेश के प्रधान प्रो. विठ्ठलराव जी थे। मुख्य अतिथि के रुप में बोलते हुए प्रो. विठ्ठल राव जी ने कहा कि संस्कृति वैदिक परम्परा में ही है और इसका पोषण आर्यसमाज के तहत ही संभव है। अभी भी आमजन रुढ़ियों व पाखण्ड में फँसा है, बाबाओं के चक्कर में फँसा है। महिलाओं की उन्नति के लिए बाहर से मदद की उम्मीद रखने के बजाय स्वयं महिलाओं को अपने अस्तित्व को पहचानना होगा। समाज में बढते दुष्कर्मो को देखते हुए महिला संगठनों को बलात्कार के लिए एकमात्र सजा मृत्युदण्ड की माँग करनी चाहिये। डॉ. गायत्री पंवार, पूर्व विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर ने नारी सशक्तिकरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सत्यार्थप्रकाश के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सत्यार्थप्रकाश में वर्णित गृहस्थाश्रम के नियम विज्ञान सम्मत हैं। सत्यार्थप्रकाश जीवन का मार्गदर्शक ग्रन्थ है एवं इसमें दिये गये नियमों के पालन से मनुष्य अपने जीवन को आनन्दमय बना सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कृति की पुनर्स्थापना, रुढ़िवादिता एवं पाखण्ड को समाप्त करने के लिए नारी की उन्नति को अति आवश्यक बताया एवं इसके लिए नारी शिक्षा पर बल दिया। उन्होंने कहा कि गुरुकुल शिक्षा की स्थापना का श्रेय आर्यसमाज को ही जाता है।

गुरुकुल शिवगंज की प्राचार्या डॉ. सूर्या देवी ने कहा कि महिला का अर्थ ही पूजनीय है। महिला सम्मेलन का उद्देश्य 'समाज के विकास में महिलाओं की भूमिका' पर चर्चा करना होता है। पूर्व में सवर्णों एवं जन्म से ब्राह्मणों के अलावा किसी को भी पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार नहीं था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हर जाति के प्रत्येक स्त्री पुरुष को पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार दिलाया। इसके लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। रेवाड़ी से पधारी प्रख्यात् भजनोपदेशिका श्रीमती पुष्पा शास्त्री ने अपनी ओजस्वी शेरो शायरी से सभी महिलाओं में जोश भर दिया। उन्होंने समाज में फैले पाखंड व अंधविश्वास पर जोशीले व चुटीले अंदाज में जबरदस्त चोट की और उपस्थित हर व्यक्ति को सोचने पर विवश कर दिया। उन्होंने कहा कि यदि देश बचाना है तो पाखण्ड मिटाना है और इसके लिए वेद पढ़ो और बढ़ते जाओ, बढ़ने का जमाना है।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास की न्यासी एवं आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर की संरक्षक श्रीमती शारदा गुप्ता ने बताया कि किस प्रकार सुन्दर प्रबन्धन द्वारा महिला सशक्तीकरण किया जा सकता है इस पर मनन करने की

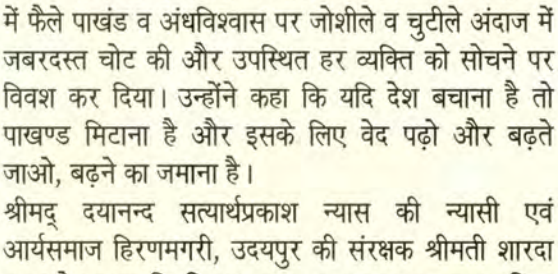

कलबुर्गी, परसारे और दाभोलकर जैसे विद्वान् बुजुर्गों की हत्याएँ शर्मनाक और निन्दनीय- स्वामी आर्यवेश

गाय ही नहीं, सभी जीवों की हत्या पर लगे रोक: आर्य जगत् के तपोनिष्ठ, तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश ने स्थानीय समाचार पत्र दैनिक भास्कर को सम्बोधित साक्षात्कार में कहा कि देश में सिर्फ गाय ही नहीं सभी जीवों की हत्या पर रोक लगनी चाहिए और केन्द्र सरकार को सभी बूचड़खाने बंद करने का कानून पारित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों कलबुर्गी, पनसारे और दाभोलकर जैसे बुजुर्ग विद्वानों और साहित्यकारों की हत्याएँ शर्मनाक हैं। देश में विद्वानों का सम्मान होना चाहिए, न कि अपमान। आप उनके विचारों से असहमत हैं तो उन्हें खुले वादविवाद की चुनौती दे सकते हैं। आर्यवेश ने यह भी कहा कि किसी के यहाँ गोमांस की अफवाह फैलाकर हत्या करने की घटना भी निन्दनीय है। इससे तो देश में गौ की असुरक्षा और बढ़ जायेगी। आर्यवेश का यह भी मानना था कि इन चीजों का राजनीतिकरण नहीं होना चाहिए।

स्वामी आर्यवेश ने दैनिक भास्कर से बातचीत के दौरान कहा कि वेदों में कहीं भी गो-हत्या का जिक्र नहीं है। यह भ्रम गलत लोगों ने फैलाया है। उन्होंने बताया कि देश में गोमांस को लेकर जिस गैरजिम्मेदारी से विवाद चल रहा है उससे साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिलेगा। भले वह किसी भी समुदाय का क्यों न हो। उन्होंने गोहत्या के मुद्दे पर सरकार को सचेत किया कि सरकार पशुओं की हत्या पर रोक के लिए कानून बनाए। हम सभी पशुओं की हत्या का विरोध करते हैं। लेकिन प्रतीकात्मक तौर पर गोहत्या के खिलाफ अभियान चला रहे हैं। क्योंकि गाय उपयोगी ही नहीं है भारतीय संस्कृति में उसकी एक विशेष जगह है।

आवश्यकता है। नारी को अपनी शक्ति को पहचानना आवश्यक है, चेतना को जगाना आवश्यक है।

हैदराबाद की डॉ. वसुधा शास्त्री ने कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं में एकता होना आवश्यक है। नारी जागी तो दुनिया जागी, नारी सोई तो दुनिया सोई।

इस अवसर पर दयानन्द मठ दीनानगर के अधिष्ठाता स्वामी सदानन्द जी ने आर्यसमाज के विकास में पंजाब की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति अपने परिवार को आर्य बना ले तो आर्यसमाज का विकास हो सकता है। साथ ही उन्होंने अंधविश्वास व पाखण्ड पर व्यंग्यपूर्ण तरीके

से चोट की।

साध्वी उत्तमा यति जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि ऋषि दयानन्द ने जो शिक्षा प्रदान करने के निर्देश दिये उसके बजाय किताबी शिक्षा पर अधिक जोर दिया जा रहा है जो

जी के नेतृत्व व निर्देशन में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के मुख्य यजमान राजस्थान के लोकायुक्त न्यायमूर्ति सज्जन सिंह जी कोठारी थे। ग्वालियर के भजनोपदेशक अशोक आचार्य ने भजन प्रस्तुत किया। इस सत्र में प्रवचन प्रस्तुत करते हुए आचार्य हरिप्रसाद जी ने कहा कि नेत्रों से तो बाह्य जगत् की वस्तुएँ दिखती हैं भगवान के दर्शन नहीं होते हैं। जो खुली आँखों से भगवान के दर्शन करने का प्रयास करते हैं वे अबोध शिशु की तरह हैं और वह भगवान के बारे में जानते ही नहीं हैं। सामान्य मनुष्य अपने परायों को प्रसन्न करने के लिए पुरुषार्थ करता है तपस्या करता है, जो समय का अपव्यय है। महर्षि व्यास कहते हैं कि मनुष्य जितना पुरुषार्थ करता है जितनी तपस्या करता है, उसका शतांश भी यदि ईश्वर के लिए करे तो प्रभु की प्राप्ति हो सकती है। सत्र संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन

महोत्सव के अंतिम सत्र में सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता स्वामी ऋतस्पति जी सरस्वती ने की। अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसे महापुरुष कभी-कभी ही संसार में आते हैं। सभी आर्यसमाजी एक होकर ऋषि ग्रन्थों के मूल स्वरुप की रक्षा करें। साथ ही सत्यार्थप्रकाश में दी गयी शिक्षाओं को जीवन में उतारने को उन्होंने सर्वाधिक महत्व दिया। भजनोपदेशक श्री अमरसिंह ने भजन प्रस्तुत किये। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए डॉ. सोमदेव शास्त्री ने

यज्ञशाला जीवन की पाठशाला: वेदप्रिय शास्त्री

वैदिक कर्मकाण्ड प्रतीकात्मक हैं। यज्ञ में सारी प्रक्रिया ज्ञानपूर्ण मनुष्य बनाने की होती है। इसमें दीपक का जलना और उसकी लौ का प्रज्ज्वलित होना उस बालक की तरह है जो लौ के साथ विकसित होता है। वेद विज्ञान के प्रख्यात मनीषी वेदप्रिय शास्त्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि दीपक के जलने की सामग्री बालक के पालन पोषण की प्रतीक है। इसमें शुद्ध वायु,शुद्ध जल और दूध की व्यवस्था होनी चाहिए। ज्ञानपूर्ण जीवन जीने के लिए भी इन्हीं की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से यज्ञशाला जीवन की एक पाठशाला है जिसके माध्यम से ज्ञानपूर्ण मनुष्यों का समाज तैयार किया जाता है। ताकि इसके माध्यम से भलीप्रकार संसार की संरचना हो सके किसी भी कर्म के साथ श्रद्धा के भाव जरूरी हैं। श्रद्धापूर्वक किया गया कर्म ही आत्मिक आनन्द की सृष्टि करता है।

चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि माता कौशल्या, माता सुमित्रा, माता देवकी के पास विश्वविद्यालय की कोई डिग्री नहीं थी फिर भी उन्होंने राम, लक्ष्मण व कृष्ण का निर्माण किया। आज तमाम डिग्रीयाँ होने के बावजूद कोई महिला राम, लक्ष्मण व कृष्ण उत्पन्न क्यों नहीं कर पा रही है? हमें पुनः ऋषि दयानन्द की शिक्षा व्यवस्था लागू करने पर गंभीरता से विचार करना होगा। दिल्ली के डॉ. देवशर्मा व अजमेर के श्री रक्षक जी ने भी संक्षिप्त उद्बोधन प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती नीता गर्ग ने किया।

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अंतिम दिवस प्रातः कालीन सत्र ७.०० बजे से ६.०० बजे तक नोएडा के आचार्य हरिप्रसाद

कहा कि वर्ष १८८३-८४ में सत्यार्थप्रकाश नाम से एक ऐसे कालजयी ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ जिसका निर्माण महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी नवलखा महल में बैठकर किया। जिसमें ३७७ ग्रन्थों के १५४२ प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। उन्होंने कहा कि सत्यार्थप्रकाश की रक्षा और प्रचार में आर्यों को तन-मन-धन झोंक देना चाहिए।

आर्य समाज के तपोनिष्ठ संन्यासी व उद्भट वक्ता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि सत्यार्थप्रकाश आर्यसमाज की पहचान है। आर्यसमाज सत्यार्थप्रकाश की वजह से जाना जाता है। देश की आजादी के आंदोलन के समय जेल में बंद क्रांतिकारियों में ८० प्रतिशत आर्यसमाजी थे। इनकी पहचान

का आधार यह था कि इनके तकियों के नीचे सत्यार्थप्रकाश रखा रहता था व ये सभी साप्ताहिक रूप से यज्ञ करते थे। राष्ट्र के निर्माण के लिए हर नागरिक का बचपन से ही सही निर्माण करना आवश्यक है। इसके लिए सत्यार्थप्रकाश एवं महर्षि दयानन्द रचित संस्कारविधि के अध्ययन की आवश्यकता है जिसमें बाल्यावस्था से लेकर मृत्युपर्यन्त के १६ संस्कारों का वर्णन है। लाला लाजपतराय से लेकर सुभाषचन्द्र बोस तक सभी के जीवन में सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव रहा है। भूतपूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने शपथ ग्रहण करते समय कहा था कि मुझे यहाँ तक पहुँचाने में सत्यार्थप्रकाश की प्रमुख भूमिका रही है। इसी प्रकार के विचार अन्य भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों यथा चन्द्रशेखर, इन्द्र कुमार गुजराल एवं चौधरी चरण सिंह ने व्यक्त किए हैं। स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के हित प्राण-प्रण से जुट जाने का आह्वान किया।

आचार्य वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सोई हुई मानवता को जगाया एवं संस्कृति की पुनर्स्थापना की। लोहे को सोना बनाने वाला पारस पत्थर तो नहीं देखा पर आर्यावर्त (भारत) ही वह पारस था जिसको छूकर विदेशी सोना बन जाते थे। महर्षि दयानन्द जी ने अपने गुरु विरजानन्द जी से संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की मगर देश की परिस्थिति को देखते हुए अपने सारे ग्रन्थ आर्यभाषा में लिखे। सत्यार्थप्रकाश जिंदा है तो हम जिंदा हैं। ऐसे कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के मूल स्वरुप की रक्षा करना एवं इसमें निहित शिक्षाओं का प्रसार करना हर आर्यसमाजी का कर्तव्य है।

विदुषी पुष्पा शास्त्री ने कहा कि 'क्या कहूँ मैं गुण दयानन्द तेरी शान में, महिमा अनन्त तेरी आती नहीं बयान में।' किसी भी धर्म में नारी को इतना सम्मान नहीं मिला जितना कि महर्षि दयानन्द ने दिया। इसके लिए हम सब उनके आभारी हैं। उन्होंने भजन के माध्यम से ओ३म् नाम की महत्ता का वर्णन किया।

पूर्व सांसद श्री रासासिंह ने सत्यार्थप्रकाश को अमर ग्रन्थ एवं कालजयी ग्रन्थ बताया। अंधकार में एक ही प्रकाश सत्यार्थप्रकाश। मानवीय मूल्यों की शिक्षा फैलाने वाला सत्यार्थप्रकाश। संस्कृति की शिक्षा फैलाने वाला सत्यार्थप्रकाश। इस प्रकार के नारे लगवाकर सब को सत्यार्थप्रकाश की रक्षा के प्रति जोश से भर दिया। साथ ही यह भी कहा कि मात्र नारे लगाने से कुछ नहीं होगा। सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाओं को ग्रहण करना व आने वाली पीढ़ी को भी प्रदान करना आवश्यक है।

राजस्थान के लोकायुक्त न्यायमूर्ति सज्जनसिंह ने कहा कि उनके व उनके परिवार के सर्वांगीण विकास में सत्यार्थप्रकाश की बहुत बड़ी भूमिका रही है। ऋषि के ग्रन्थों के मूल स्वरुप से छेड़छाड़ करना पाप है व्यभिचार है। ऐसे कालजयी ग्रन्थ की रक्षा करने का कार्य एक पुनीत कार्य है जिसमें हर व्यक्ति को अपना सम्पूर्ण योगदान देना ही चाहिये। उन्होंने स्वयं ने एक लाख रुपये के अनुदान की स्तुत्य घोषणा की। कोठारी जी ने कहा कि हमारे लालन-पालन के लिए हम हमारे सांसारिक माता-पिता के प्रति धन्यवाद अदा करते हैं यह अच्छी बात है। सांसारिक माता-पिता तो परमात्मा द्वारा प्रदत्त चीजों के माध्यम से आपका लालन-पालन करते हैं। लेकिन जिस परम पिता परमात्मा ने हमें हर चीज प्रदान की है उसके प्रति आभार व्यक्त करने का हमारे पास समय नहीं है, यह परमात्मा के प्रति कृतघ्नता है जो उचित नहीं है। इस हेतु परमात्मा की सत्ता को हर स्थान पर महसूस करना ही परमात्मा की उपासना है। यज्ञ भी परमात्मा की उपासना का एक रूप है। यज्ञ से आप अपने परमात्मा से जुड़ते हैं। उपासना से बुद्धि सही मार्ग पर प्रशस्त होती है। गायत्री मंत्र की उपासना से ईश्वर से जुड़कर सहनशक्ति प्राप्त होती है। विपत्ति में साहस प्राप्त होता है। इस सम्मेलन का संयोजन बांसवाड़ा के श्री जीववर्द्धन शास्त्री ने किया। आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल के प्रधान श्री आनन्द कुमार आर्य ने भी पधारकर समारोह की शोभा बढ़ाई।

महोत्सव के अंत में न्यास के संयुक्त मंत्री डा. अमृतलाल तापड़िया ने सभी सहयोगियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। अगले वर्ष पुनः मिलेंगे के संकल्प के साथ अत्यन्त सफल व प्रेरणादायी समारोह का समापन हुआ।

वेद शिक्षा से ही दुनिया में भारत की पहचान- डॉ.सोमदेव शास्त्री

राष्ट्र निर्माण पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए डॉ. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि राष्ट्र निर्माण की नींव महर्षि दयानन्द सरस्वती ने रखी थी। आजादी के बाद जो एकजुट भारत बना, उसमें स्वामी जी की अहम भूमिका रही। विकसित राष्ट्र की पहचान के लिए वेद का पठन पाठन ही एकमात्र विकल्प है। वेद शिक्षा से ही भारत विश्व में पहचान कायम रख सकता है।

समाचार

श्री वरुणमुनि नहीं रहे

वरुणमुनि वानप्रस्थ (पूर्व गृहस्थ नाम डॉ. रामकृष्ण आर्य) का जन्म दिनांक २४ नवम्बर, १९४२ को श्री गोविन्दराम जी आर्य के यहाँ हुआ, माता जी का नाम स्व. श्रीमती सीता देवी आर्य था। आई.टी.आई पास कर नौकरी की तलाश में घर से आने लगे तो **पिताजी ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने एक पुस्तक लिखी है नाम है सत्यार्थप्रकाश। मैं तो पढ़ नहीं पाया परन्तु अगर तुम्हें मिले तो अवश्य पढ़ना।** संयोग निर्मित होने पर उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ना शुरू किया। जैसे-जैसे पढ़ते जा रहे थे वैसे-वैसे उनकी आँखों से अश्रु धारा बहने लगी और मन में सोचने लगे कि मैं अब तक कहाँ था। इसके बाद तो ये पूर्णतः दयानन्द के होकर रह गये।

श्री रामकृष्ण जी स्वामी दयानन्द के सिद्धान्त के साथ कभी समझौता नहीं करते थे। जो आर्यसमाज के नियम विरुद्ध होता था ये देख नहीं सकते थे। जब आर्य समाज में सक्रिय रहे तो इन्होंने सोचा कि अपनी स्वयं की शिक्षा का स्तर बढ़ाना चाहिए। शनैः शनैः डिग्रियाँ प्राप्त करते हुए सन् १९९० में 'महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में प्रतिपादित आर्थिक विचारधारा' विषय पर ख्यातिप्राप्त आर्य शोध निदेशक डॉ. श्री भवानीलाल जी भारतीय के निर्देशन में दयानन्द अनुसंधान पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से डॉ. ऑफ फिलासफी की उपाधि प्राप्त की। आपने अपने साथियों के साथ मिलकर 'आर्य परिवार कोटा' की स्थापना की। महर्षि दयानन्द, आर्य समाज, वैदिक समाज व्यवस्था और वर्तमान औद्योगिक समस्याओं सहित कई विषयों पर आपके द्वारा अनेक शोध लेख, पैम्पलेट लिखित और प्रकाशित हो चुके हैं। अभी तक कुल १७ पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। अखिल भारतीय सत्यार्थप्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता, उदयपुर व अन्य क्षेत्र में आपने कुल मिलाकर ७ बार प्रथम स्थान प्राप्त किया। आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली और श्रीराम फर्टिलाईजर्स एण्ड केमिकल्स, कोटा और आर्य सेवक (मासिक पत्र) शताब्दी, नागपुर से भी आप 'आर्य लेखक' के तौर पर सम्मानित और पुरस्कृत हो चुके थे।

अनेक बीमारियों से घिर जाने के बावजूद भी आप येन केन प्रकारेण स्व-सामर्थ्यानुसार माँ आर्य समाज की सेवा करते रहे। १४.१०.१५ को प्रातः १० बजे आपका निधन हुआ। आपका निधन आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा परिवारी जनों को वह शक्ति दें कि वे इस वियोगजन्य पीड़ा को सहन कर सकें। **- अशोक आर्य**

विजयादशमी पर्व मनाया गया

आर्य समाज हिरणमगरी सेक्टर ४ उदयपुर में विजयादशमी पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर जयपुर से पधारी संस्कृतज्ञ विदुषी डा. गायत्री पँवार का सारगर्भित प्रवचन हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिवपुरी (म.प्र.) से पधारे श्री लखबीर सिंह सूद ने की। **- रामदयाल मेहरा**

दुपहिया वाहन-क्षेत्र में विश्व की सर्वोच्च कम्पनी के स्वामी, भारत में दुपहिया क्रान्ति के जनक व हीरो मोटो कार्प के संस्थापक श्री बृजमोहन मुंजाल का निधन

आर्य जगत् तथा भारतीय उद्योग जगत् की ख्यातनाम हस्ती श्री बृजमोहन लाल मुंजाल का ९२ वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे इस

न्यास के आजीवन न्यासी महात्मा सत्यानन्द मुंजाल के भाई थे।

श्री मुंजाल का जन्म १९२३ में कमलिया (जो आजकल पाकिस्तान में है) में हुआ। विभाजन के पश्चात् मुंजाल भाइयों ने लुधियाना में साईकिल बनाने के छोटे से उद्योग से शुरूआत की और आज जैसा सब जानते हैं, आकाश को स्पर्श कर लिया।

आर्यजगत् को मुंजाल परिवार की देन प्रख्यात् है। ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में लगी कोई ऐसी संस्था नहीं है जिसे मुंजाल परिवार का स्नेह न मिला हो। आपके वंशज, सभी आर्य समाज से जुड़े हैं तथा आर्य संस्थाओं को सहयोग करते रहते हैं।

श्री बृजमोहन मुंजाल ने अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे EII, SIAM, AICM। तथा PHD का नेतृत्व किया। वे रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय बोर्ड के सदस्य रहे। **उनकी सेवाओं के लिए २००५ में उन्हें 'पद्म भूषण' सम्मान से अलंकृत किया गया।**

आप सद्यः महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा के प्रधान थे। आपका निधन आर्य जगत् को अपूरणीय क्षति है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा परिवारीजनों को वह शक्ति दें कि वे इस वियोगजन्य पीड़ा को सहन कर सकें।

- भवानीदास आर्य, मंत्री, न्यास

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - २१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- २१** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री धर्मप्रकाश आर्य; नवादा (बिहार), मोनिका गौड़; बीकानेर (राज.), श्री राहुल सिंह राठौड़; विजयनगर (राज.), श्री विश्वेन्द्र सिंह; भीलवाड़ा (राज.), श्री शिवकुमार प्रजापत; बीकानेर (राज.), श्री विपिन आर्य; सोनीपत (हरियाणा), श्री अनिल कुमार; मेरठ (उ.प्र.), श्री जादव दयाल; सूरत (गुजरात), श्री मितेश चौधरी; भीलवाड़ा (राज.), श्री माईलाल गर्वा; बीकानेर (राज.)। **इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।**

वैज्ञानिक धर्म एवं धार्मिक विज्ञान की ओर

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

यह स्वभाव प्रत्येक प्राणी का होता है कि वह दुःख से बचना तथा सुख को पाना चाहता है। फिर भला सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी मनुष्य क्यों नहीं सुखप्राप्ति हेतु पूर्ण पुरुषार्थ करेगा? आज संसार भर के प्रबुद्ध मनुष्य चाहे वे किसी भी उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर आसीन हों, संसार को सुखी बनाने का यत्न अपने-अपने ढंग से करते प्रतीत हो रहे हैं।

संसार के संविधान, धर्माचार्य, सामाजिक संस्थाएँ, विकसित होता विज्ञान, अर्थशास्त्री, शिक्षा-शास्त्री आदि सभी इसके लिए प्रयत्नशील हैं कि मनुष्य सुखी होवे परन्तु इसके उपरान्त भी आज सम्पूर्ण विश्व अशांति, आतंक, हिंसा, घृणा, मिथ्या, छल-कपट, ईर्ष्या, राग, द्वेष से ग्रस्त होकर अति दुःखी व अशांत है। धनी-निर्धन, बली-निर्बल वा विद्वान्-मूर्ख सभी अशांत हैं। तब विचार होता है कि क्या कारण है कि चिकित्सा करते रहने पर भी रोग बढ़ता ही जा रहा है। मेरा मानना है कि इस सब का मूल कारण सत्य और वास्तविकता से अनभिज्ञ रहना अथवा जानकर भी उसके अनुकूल व्यवहार न करना ही है। आज सारे संसार में विकास की प्रतिस्पर्धा हो रही है। हम दूसरे को छल से गिराकर उससे आगे जाना चाहते हैं। दूसरे की झोंपड़ियाँ जलाकर अपने भव्य भवन बनाना चाहते हैं, दूसरे की थाली से सूखी रोटियाँ भी छीनकर स्वयं सुस्वादु सरस भोजन करना चाहते हैं, दूसरों के तन के जीर्ण-शीर्ण वस्त्र भी खींचकर स्वयं बहुमूल्य वस्त्र पहनकर

फैशन करना चाहते हैं, तथा दूसरों का गला घोंटकर स्वयं एकाकी अमर जीवन जीना चाहते हैं। क्या ऐसा विकास हमारी शांति का विनाशक नहीं है? मानवीय-आत्मा का हनन करने वाला नहीं है? हमें विचारना होगा कि विज्ञान ने हमें अनेकों सुख सुविधाऐं प्रदान कीं परन्तु क्या हम सुखी व सन्तुष्ट हुए? क्या दया, करुणा, मैत्रीभाव, भाईचारा, ईमानदारी, सच्चाई जैसे मानवीय मूल्यों को अंधाधुंध विकास की इस आँधी ने नष्ट-भ्रष्ट नहीं कर दिया है? जिस मनुष्य के लिए इन संसाधनों का विकास हो रहा है, वह मनुष्य अन्तःकरण एवं आत्मा से कितना विकसित हुआ है? उसका हृदय कितना विशाल व उदात्त हुआ है? उसका मस्तिष्क कितना सत्याऽसत्य विवेकी व न्यायप्रिय हुआ है? क्या आज किसी के पास यह सोचने का समय वा इच्छा है? मेरे प्यारे मित्रो! जरा सोचिए। इसका दोष विज्ञान को तो नहीं दिया जा सकता। विज्ञान तो साधन है, साधन स्वयं में अच्छा वा बुरा नहीं होता, बल्कि उसके उपयोगकर्त्ता पर निर्भर है कि साधन से अच्छा कार्य करे वा बुरा। उपयोगकर्त्ता की मनोवृत्तियाँ ही अच्छे व बुरे के लिए उत्तरादायी हैं।

अब प्रश्न उठता है कि मनुष्य की पतनोन्मुखी वृत्तियों का परिष्कार कौन करे? तब हमारा ध्यान सहसा ही धर्म की ओर जाता है परन्तु आज संसार में देखें तो अनेक परस्पर विरुद्ध विचार वाले मत मतान्तर धर्म का रूप धारण करके मानव को सुधारने का प्रयत्न करते दिखाई दे रहे हैं और वास्तविकता यह है कि मानव इसमें फँसकर अंधविश्वास, रुढ़िवाद, अविद्या, दुराग्रह, पारस्परिक घृणा, हिंसा की ओर बढ़ता रहा है एवं बढ़ रहा है। धर्म के नाम पर जितना रक्तपात होता आया है, सम्भवतः उतना किसी अन्य कारण से नहीं हुआ हो। आज भी यह पाप जारी है। आज के वैज्ञानिक युग में भी धर्म के नाम इतनी हिंसा, कट्टरता, द्वेष व असहिष्णुता है, जिसकी कल्पना से ही हृदय विदीर्ण होता है। आज गौ नामक महोपकारी पशु, गंगा नदी, तुलसी, पीपल आदि वृक्ष तो साम्प्रदायिक हो ही गये, अब तो सूर्य, चन्द्र, तारों व भगवे, हरे रंग एवं व्यायाम-प्राणायाम भी साम्प्रदायिक रंग में रंग दिए गये हैं।

आज यदि कुछ अतिवादियों का सामर्थ्य होवे तो उगते सूर्य व आग की ज्वालाओं को भी हरा बना दें तथा यदि कुछ अन्य अति कट्टरवादियों का वश चले तो समस्त वनस्पति जगत् का हरा रंग भी नष्ट कर दें। आज समस्त ज्ञान-विज्ञान का मूल स्रोत वेद वा भारतीय प्राचीन महापुरुष इस साम्प्रदायिक द्वेष के शिकार हो रहे हैं। आज धर्म ने बड़ा भयंकर विनाशक रूप धारण कर रखा है। इस पाप के लिए सभी दोषी हैं, कोई न्यून तो कोई अधिक। इस तमोमयी निशा में स्वार्थान्ध कथित धर्मगुरु इस नादान मानव जाति को परस्पर लड़ाकर नष्ट करके अपने-अपने स्वार्थों को साध रहे हैं। नित नये-नये ढंग

से एक दूसरे पर बौद्धिक आक्रमण कर रहे हैं, तो राजनेता वा सामाजिक कार्यकर्ता कहाने वाले बिना सत्य का अनुसंधान किये अज्ञानमूलक तुष्टीकरण करके सत्याऽसत्य विवाद पर मूकदर्शक बने हैं। कहीं लिंग भेद, भाषा, क्षेत्र, ग्रामीण, नगरीय आदि आधार पर संघर्ष हो रहे हैं, तो कहीं निर्धन व धनी के बीच खाई खोदी जा रही है। कहीं जातिवाद व छूआछूत का अजगर इस राष्ट्र व विश्व को निगलने का प्रयास कर रहा है। इन सबके पीछे कहीं न कहीं कुछ न कुछ कथित धर्म की भूमिका अवश्य है।

मित्रो! क्या कभी आपने विचार किया है कि यह सब क्या हो रहा है? क्या मानव का यही कर्तव्य है? क्या इसे ही धर्म कहेंगे? मैं जब इस पर विचारता हूँ तो प्रतीत होता है कि केवल विश्वास के आधार पर टिके मत-मतान्तरों का होना ही मानव जाति के लिए घातक है। आज जिसे भी इच्छा हो अपनी मिथ्या

आस्था के आधार पर अपना पंथ चलाकर नादान मनुष्यों को अपना अनुगामी बनाकर ठग सकता है। वह शासन से अपने मत के अल्पसंख्यक होने का दावा करके स्वेच्छया माँग भी रख सकता है। वोट के लोभी शासक सेक्यूलरिज्म के नाम पर उसे भी अपनी अंध आस्थाओं को प्रचारित करने का अवसर दे देता है। विज्ञान के ठेकेदार बनने वालों ने भी ऐसी अज्ञानता का ताण्डव मचा रखा है। इससे सत्य धर्म लुप्त हो रहा है। उधर कोई-कोई धर्म व संस्कृति को ही उखाड़ फैंकने का आह्वान करते हैं। इस अनिष्ट फल से बचने के लिए धर्म (जो केवल एक ही हो सकता है, जबकि मत-पंथ अनेक हो सकते हैं) को सच्चे स्वरूप में समझना होगा। ऐसा तब हो सकेगा जब इसे विज्ञान के साथ पूर्णतः जोड़ दिया जायेगा। तब धर्म पर आस्था रखने वाले उसी प्रकार एकमत हो सकेंगे, जिस प्रकार भौतिकी, रसायन-विज्ञान, गणित, खगोलिकी, जीव-विज्ञान, कृषि विज्ञान, आयुर्विज्ञान आदि विषयों में संसार के सभी मनुष्य एक मत हैं। इन भौतिक विद्याओं के कारण संसार में न कभी अलगाववाद पनपा और न रक्तपात ही हुआ। ध्यान रहे कि केवल आस्था व विश्वास से सत्य का निर्णय कभी नहीं हो सकता। आस्था व विश्वास परस्पर टकरायेंगे ही, जबकि सत्य कभी नहीं टकराता। इस संसार में मिथ्या आस्था, विश्वास जन्य मतों ने खूनी खेल खेले हैं व खेल रहे हैं, परन्तु सत्य कभी किसी का खून नहीं लेता। आस्थायें मानव जाति को बाँटती हैं, जबकि सत्य मानव को जोड़ता है। आश्चर्य है कि छोटी-छोटी बातों में विज्ञान व तर्क की वकालत करने वाले धर्म के विषय में क्यों ऐसा नहीं करते? मुझे आश्चर्य व दुःख है कि दुःखनाशक व सुखमूलक धर्म के नाम पर यह पाप क्यों? आध्यात्मिकता के नाम पर ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा क्यों?

मेरे जागरूक मित्रो! हमें धर्म का एक ऐसा सच्चा स्वरूप संसार के सम्मुख लाने का प्रयास करना होगा, जिसमें पाखण्ड, अंधविश्वास, अवैज्ञानिकता, पूर्वाग्रह, रुढ़िवाद, अमानवीयता, पक्षपात व असत्य का कोई स्थान नहीं हो। जो देश, काल व परिस्थितियों की सीमाओं से परे शाश्वत व सार्वदेशिक हो। जो मानव ही नहीं अपितु प्राणिमात्र के लिए सदैव हितकर हो। यही विचार संसार के आद्य ऋषि ब्रह्मा से लेकर ऋषि दयानन्द पर्यन्त का रहा है।

धर्म के नाम पर अलगाववाद का पाठ पढ़ाने वाले सत्य, तर्क, विज्ञान के नाम से भयभीत होकर दूर भागने वाले धर्म प्रचारकों, आचार्यों, साधु-सन्तों, पंडितों, मौलवियों, पादरियों, ग्रंथियों आदि सभी मान्य महानुभावों को अपने-अपने हठ, दुराग्रह, पूर्वाग्रह पद-प्रतिष्ठा धन की लालसा को त्याग कर विज्ञान-बुद्धि से सोचने का साहस जुटाना होगा। उन सभी महानुभावों को विचारना होगा कि जब हम परमात्मा के बनाये भौतिक नियम विज्ञानादि पर एकमत हो सकते हैं। इन विषयों को साथ-साथ मिल बैठकर पढ़-पढ़ा सकते हैं और ऐसा करते हुए भौतिक उन्नति कर सकते हैं, तब इसी भाँति परमात्मा के ही बनाये आध्यात्मिक नियमों में परस्पर भेद क्यों स्वीकार करते व बढ़ाते हैं?

आज नये-नये मत जन्म लेकर अपने को सच्चा धर्म बताने का दावा कर रहे हैं, तो आमजन ही नहीं अपितु अत्युच्च शिक्षित महानुभाव यहाँ तक वैज्ञानिकों का भी धर्म विषयक विशेष अध्ययन व चिन्तन नहीं होता, इससे वे भी भय या लोभ के वशीभूत अथवा भीड़ को देखकर मत-पंथों के दलदल में फँस जाते हैं। बड़े-बड़े राजनेता, समाजशास्त्री, पत्रकार, संविधानवेत्ता व साहित्यकार भी धर्म विषय में नितान्त मूढ़ बन

सत्याऽसत्य विवेक बिना ही एकता का मिथ्या पाठ पढ़ाते हैं। कोई यह विचारने का यत्न नहीं करता कि सत्य का आधार न तो भारी भीड़ होती है, और न ही लोभ या भय से उत्पन्न कोई फलाकांक्षा की पूर्ति हो जाना। सत्य निर्णय वैज्ञानिक बुद्धिजन्य तर्क, प्रमाण व तथ्यों के आधार पर तथा गहन, मनन, चिन्तन

व निर्मल निष्पक्ष निःस्वार्थ हृदय से ही हो सकता है, जो आज दुर्लभ हो गया है। हम यह भी विचारने का प्रयत्न नहीं करते कि हम धर्माचार्य सत्य, न्याय, निःस्वार्थ, निष्कपटता की बात करते अवश्य हैं, परन्तु अपने-अपने मत की न्यूनताओं को जानते हुए भी दुराग्रही बने रहते हैं तथा अपने मत के दोष बतलाने वाले के प्राणघातक भी बन बैठते हैं। तब सत्य ग्रहण की तो बात ही क्या कहें? उधर जो वैज्ञानिक सत्य, न्याय, पक्षपातरहितता, अध्यात्म, निर्मलता, नैतिकता की लेशमात्र भी चर्चा नहीं करते, वे सत्य के ग्रहण तथा असत्य के परित्याग के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। कोई वैज्ञानिक जिसे धर्माचार्य भले ही नास्तिक कह दें, अपने जीवन भर के पुरुषार्थ से खोजे गये किसी सिद्धान्त को किसी अन्य वैज्ञानिक द्वारा असिद्ध होते जान लेता है, तब वह तत्काल अपनी भूल को स्वीकार कर नवीन सिद्धान्त को अपना लेता है। जिस बात को वैज्ञानिक नहीं जानता तो तत्काल अपनी कमी स्वीकार कर लेता है। कभी अतिशयोक्ति में बात नहीं करता। अहा! कैसा अनूठा आदर्श वे हम धर्माचार्य कहाने वालों के लिए प्रस्तुत करते हैं। ऐसे धर्म को धिक्कार है, जो हमें सत्य की ओर जाने से रोके। क्या हमें यही नहीं सोचना चाहिए कि हमें सत्याऽसत्य विवेक के क्षेत्र में सबसे अधिक उदार व विशाल हृदय होना चाहिए क्योंकि सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता। मैं विचारता हूँ कि जिस दिन विश्व भर के धर्माचार्य पूर्ण निष्पक्ष एवं वैज्ञानिक बुद्धि से युक्त होकर सत्य का ग्रहण व असत्य का परित्याग करने का सत्साहस करेंगे, उस दिन सम्पूर्ण भूमण्डल पर एक सत्य धर्म का शासन होगा, एक ईश्वर (वह ईश्वर विशुद्ध वैज्ञानिक युक्तियों से भी सर्वथा सिद्ध करने योग्य है तथा जिसका स्वरूप भी सर्वथा वैज्ञानिक है। शोक है कि आज इस महान् तथा सर्वाधिक गम्भीर विज्ञान को कथित आस्थाओं वा कथित सैक्यूलरिज्म वा प्रबुद्धता के कोलाहल में भुला दिया गया है। इस एक ध्रुव वैज्ञानिक सत्य को सहस्रों रूपों में कल्पित करके मानवता को खण्ड-खण्ड कर दिया है। इस विषय में हमारी वेबसाइट पर 'ईश्वर अस्तित्व एवं स्वरूप की वैज्ञानिकता' वीडियो देख सकते हैं। **क्रमशः ....**

- अध्यक्ष, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
भीनमाल, चलभाष- ०९४१४१८२१७३

□□□

निर्वाचन

आर्य समाज भीमगंजमण्डी के चुनाव सम्पन्न

श्री प्रेम नाथ कौशल-प्रधान; श्री धीरेन्द्र गुप्ता-मंत्री; श्री मनोज गुप्ता-कोषाध्यक्ष। सभी पदाधिकारियों को सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ। - भवानीदास आर्य

□□□

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

ऋषि दयानन्द के साहित्य का भाषागत अध्ययन

डॉ. मंजुलता विद्यार्थी

विषयानुरूप सशक्त भाषा- ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में विषयानुरूप भाषा का प्रयोग हुआ है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसे गम्भीर ग्रन्थों का प्रणयन करते समय उनकी भाषा विषय के अनुरूप वैसी ही गम्भीर और अर्थव्यंजक हो उठी है। जैसे कि 'जो ईश्वर का अभिप्राय द्विजों ही के ग्रहण करने का होता तो मनुष्य मात्र को उनके पढ़ने का अधिकार कभी न देता। जैसाकि इस मंत्र में प्रत्यक्ष विधान है, अर्थात् वेदाधिकार जैसे ब्राह्मण वर्ण के लिए है वैसा ही क्षत्रिय, अर्य्य-वैश्य, शूद्र, पुत्र, भृत्य और अतिशूद्र के लिए भी बराबर है, क्योंकि वेद ईश्वर प्रकाशित हैं। जो विद्या का पुस्तक होता है, वह सबका हितकारक है और ईश्वर रचित पदार्थों के दायभागी सब मनुष्य अवश्य होते हैं। इसलिए उसका जानना सब मनुष्यों को उचित है, क्योंकि वह माल सबके पिता का सब पुत्रों के लिए है, किसी वर्णविशेष के लिए नहीं।'

विचारों की गहनता व दार्शनिकता के समय उनकी भाषा ज्यादा क्लिष्ट तथा संस्कृतनिष्ठ लगती है, किन्तु फिर भी उसमें स्पष्टता का गुण वर्तमान रहता है और वह अपने विवेच्य विषय को पूरे बल से पाठक के लिए बोधगम्य बना देती है। यथा-'देखो शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान् लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाडों का जोड़, नाड़ियों का बंधन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत्, फेफड़ा, पंखा कला का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरूप मूलरचन, लोम नखादि का स्थापन, आँख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन,

इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिए स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागकरण, कला-कौशल-स्थापनादि अद्भुत सृष्टि को विना परमेश्वर के कौन कर सकता है?

इसी प्रकार इसके विना नाना प्रकार के वट वृक्ष आदि के बीजों में अति सूक्ष्म रचना, असंख्य हरित, श्वेत, पीत, कृष्ण, चित्र मध्यरूपों से युक्त पत्र, पुष्प, फल, मूल-निर्माण, मिष्ट, क्षार, कटुक, कषाय, तिक्त, अम्लादि विविध रस, सुगन्धादियुक्त पत्र, पुष्प, फल, अन्न, कन्द-मूलादिरचन, अनेकानेक क्रोड़ों भूगोल सूर्य चन्द्रादि लोक-निर्माण, धारण, भ्रामण, नियमों में रखना आदि परमेश्वर के विना कोई भी नहीं कर सकता।'

उपर्युक्त अवतरण में सृष्टि की सुन्दर, आश्चर्यजनक व बुद्धिगम्य रचना का उद्धरण प्रस्तुत कर ऋषि दयानन्द ने इसके रचयिता परमेश्वर की सत्ता सिद्ध की है। **आज से सौ वर्ष से भी अधिक समय पूर्व लिखे गये सत्यार्थप्रकाश की यह विशुद्ध आर्यभाषा हिन्दी साहित्यकार के सामने आदर्श प्रस्तुत कर रही है।**

शब्द भंडार की अभिवृद्धि- संस्कृत से जुड़े होने के कारण ऋषि दयानन्द के साहित्य से हिन्दी भाषा में शब्द भंडार की अनुपम वृद्धि हुई है। ऋषि दयानन्द को अपनी बात कहने अथवा स्पष्ट करने में कभी शब्दों की कमी महसूस हो सकती है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उनके पास शब्दों की विशाल सम्पदा थी। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ नामों की व्याकरण-सम्मत सार्थक व्याख्या ऋषि दयानन्द ने की है। ईश्वर का सर्वोत्तम और श्रेष्ठ नाम 'ओ३म्' बताते हुए, शेष नाम ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप सिद्ध किए हैं। जैसे स्वप्रकाशस्वरूप होने से 'अग्नि', विज्ञान-स्वरूप होने से 'मनु', सबका पालन करने से 'प्रजापति' और परमैश्वरर्यवान् होने से 'इन्द्र' सबका जीवन मूल होने से 'प्राण' और निरन्तर व्यापक होने से परमेश्वर का नाम 'ब्रह्म' है।

इसी प्रकार सब जगत् के बनाने से 'ब्रह्मा', सर्वत्र व्यापक होने से 'विष्णु', दुष्टों को दण्ड देके रुलाने से 'रुद्र', मंगलमय और सबका कल्याणकर्त्ता होने से 'शिव', प्रलय में सबका काल और काल का भी काल है इसलिए परमेश्वर का नाम 'कालाग्नि' है।

इस प्रकार ईश्वर के विभिन्न नामों की बुद्धिपरक व्याख्या करते हुए ऋषि दयानन्द ने बताया है कि ईश्वर का कोई भी नाम अनर्थक नहीं है। यह ऋषि दयानन्द के शब्द सामर्थ्य को सिद्ध करता है। इसी प्रकार आर्याभिविनय में ईश्वर की प्रार्थना करते हुए उसे नब्बे के लगभग सम्बोधनों से पुकारा

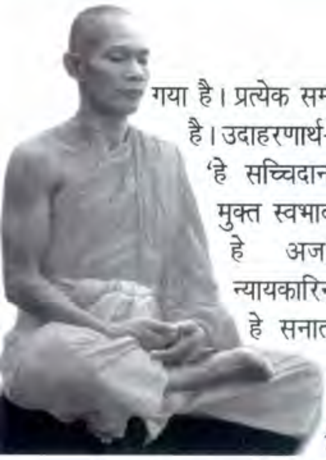

गया है। प्रत्येक सम्बोधन ईश्वर का गुणवाची विशेषण है। उदाहरणार्थ-

'हे **सच्चिदानन्दस्वरूप**, हे नित्य, शुद्ध, बुद्ध, **मुक्त स्वभाव**, हे अद्वितीयानुपमजगदादिकारण, हे अज, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारिन्, हे जगदीश, सर्वजगदुत्पादकाधार, हे सनातन, सर्वमंगलमय, सर्वस्वामिन, हे करुणाकर, परमसहायक, हे सर्वानन्दप्रद, सकलदुःख विनाशक, हे अविद्यान्धकार निर्मूलक, विद्यार्कप्रकाशक, हे परमैश्वर्यदायक, साम्राज्यप्रसारक, हे अधमोद्धारक पतितपावन, मान्यप्रद, हे विश्वविनोदक, विनयविधिप्रद, हे विश्वविलासक, हे निरंजन, नायक, शर्मद, नरेश, निर्विकार, हे सर्वान्तर्यामी, सदुपदेशक, मोक्षप्रद, हे सत्यगुणाकर, निर्मल, निरीह, निरामय, निरुपद्रव, दीनदयाकर, परमसुखदायक, हे दारिद्र्यविनाशक, निर्वैर विधायक, सुनीतिवर्द्धक, हे प्रीतिसाधक, राज्यविधायक, शत्रुविनाशक, हे सर्वबलदायक, निर्बलपालक, सुधर्मसुप्रापक, हे अर्थसुधारक, सुकामवर्द्धक, ज्ञानप्रद, हे सन्ततिपालक, धर्मसुशिक्षक, रोग विनाशक, हे पुरुषार्थप्रापक, दुर्गुणनाशक, सिद्धिप्रद, हे सज्जनसुखद, दुष्टसुताडन, गर्व कुक्रोधकुलोभ विदारक, हे परमेश, परेश, परमात्मन, परब्रह्मन, हे जगदानन्दक, परमेश्वर व्यापक सूक्ष्माच्छेद्य' इत्यादि संस्कृतनिष्ठ शब्दों से हिन्दी शब्द भंडार में अभिवृद्धि की है। ऐसे लगता है, ऋषि दयानन्द सार्थक शब्दों से खेल ही रहे हैं। सगुण भक्त कवियों ने तो परमात्मा की सत्ता को राम-कृष्ण तक ही सीमित कर दिया था। **ऋषि दयानन्द ने परमात्मा के गुणों के आधार पर इतने विशेषणों से उसे सम्बोधित किया है, जितना अन्य किसी भक्त कवि या साहित्यकार ने नहीं किया।** संस्कृत बहुल होने पर भी उनकी शब्द-सम्पदा में तत्सम और तद्भव दोनों प्रकार के शब्द हैं। हिन्दी भाषा को उन्होंने गुरुकुल, आश्रम, स्नातक, कुलपति, आर्य, आर्यावर्त्त, आर्यभाषा, नमस्ते आदि अनेक प्राचीन शब्द दिए हैं।

खड़ी बोली हिन्दी के शैशवकाल में ऋषि दयानन्द के साहित्य ने हिन्दी गद्य को गम्भीर, सरल, ओजस्वी, सशक्त, प्रभावशाली तो बनाया ही, साथ ही उसे रोचकता और लचीलापन भी प्रदान किया। उन्होंने भाषा को निखारा तथा प्राणवन्त बनाया। साथ ही भाषा को सरल व सुबोध बनाने की ओर उनका ध्यान सदैव रहता था। 'राजा लक्ष्मणसिंह का दृष्टिकोण अपनाकर उन्होंने हिन्दी को बोझिल और केवल विद्वत् समाज की भाषा नहीं बनने दिया। उनकी हिन्दी से न तो गवाह निर्वासित हुआ और न ही कलेक्टर को धक्का दिया गया। वे तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग भी सन्तुलित रूप से करते थे। 'सर्व' के साथ साथ 'सबका' व्यवहार भी किया करते थे।'

ऋषि दयानन्द की भाषा के प्रारम्भिक दोष- ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक भाषा में खटकने वाले दोष कारकों और क्रियापदों से सम्बन्धित हैं। ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक रचनाओं में विभिन्न क्रियारूप प्रयुक्त हुए हैं, उनमें कुछ क्रियाओं पर ब्रजभाषा का प्रभाव है तो कुछ संस्कृत अनुकरण पर प्रयुक्त हैं। उनकी भाषा में देखैं, जीवैं, सुनैं, कहैं, रहैं, आदि क्रियारूप बहुत से स्थानों पर दिखाई देते हैं। इसी प्रकार उन्होंने 'ऐश्वर्यादि कभी न बढ़े' और 'प्राप्त कराओ' के स्थान पर क्रमशः 'कभी मत बढ़ो तथा प्राप्त करो' प्रयोग किया है। 'प्रदान कीजिए' तथा 'प्राप्त कराइए' के स्थान पर क्रमशः 'प्राप्त कीजिए' तथा 'प्राप्त करिए' का प्रयोग भी मिलता है, किन्तु इस प्रकार के दोष उस काल के सभी गद्य लेखकों की भाषा में मिलते हैं।

डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे ने लिखा है कि 'स्वामी दयानन्द सरस्वती के समकालीन भारतेन्दु युग के लेखकों की भाषा में भी अनेक दोष थे। उस काल में हिन्दी शब्दों की वर्तनी स्थिर नहीं हो पाई थी। **श्री प्रतापनारायण मिश्र की भाषा में 'जिस्तरह', 'सक्ता', 'वक्त्रिता' आदि शब्द बहुलता से मिलते हैं, पर वर्तनी की दृष्टि से स्वामी दयानन्द की भाषा अधिक शुद्ध व स्थिर है।** उन्होंने दूसरों की अपेक्षा संस्कृत के तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग किया है जिनकी वर्तनी विवाद से मुक्त थी। वर्तनी को स्थिरता प्रदान करने में ऋषि दयानन्द का महत्वपूर्ण योगदान है। उनकी भाषा भी उत्तरोत्तर परिष्कृत तथा प्रांजल होती चली गई। ऋषि दयानन्द के अहिन्दी भाषी क्षेत्र से आने के कारण तथा हिन्दी भाषा का वह शैशव काल होने से उनकी प्रारम्भिक रचनाओं के ये दोष स्वाभाविक हैं। श्री विष्णु प्रभाकर के अनुसार 'किसी भी भाषा के शैशवकाल में ऐसा होना आश्चर्यजनक नहीं है। लेकिन उसके बाद निरन्तर बोलते और लिखते लिखवाते रहने के कारण उनकी भाषा में निखार ही नहीं आता गया बल्कि अभिव्यक्ति की अद्भुत क्षमता भी पैदा होती गई। वह अब प्रौढ़, परिमार्जित ओर प्रांजल हो गई थी। उन्होंने सहजभाव से हिन्दी गद्य को गम्भीर सरल, ओजस्वी, सशक्त, प्रभावशाली और साथ ही रोचक और लचीला भी बना दिया।'

- श्रुति-सौरभ
इंजीनियर्स कॉलोनी, धनवन्तरी नगर
उमरी, अकोला- ४४४००५

❑❑❑

महिला होना गुनाह है क्या ?

- प्रो. शामलाल कौशल, रोहतक

जगत् विधाता, परमपिता परमात्मा द्वारा चलाये गये इस जीवन-चक्र को जारी रखने के लिए पुरुष तथा स्त्री एक समान महत्वपूर्ण हैं। नारी को जननी, माँ आदि कहकर उसका सम्मान करने वाली बातें भी सुनने को मिलती हैं। 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी', 'नारी यत्र पूज्यते देवता तत्र निवसन्ति' आदि वाक्य नारी की स्तुति के लिए जब कहे जाते हैं तो बहुत अच्छा लगता है, लेकिन वास्तविक स्थिति इससे बिल्कुल भिन्न है। भारतीय समाज सदा पुरुष प्रधान रहा है। हमारे देश के अधिकांश साधुओं, संतों, दार्शनिकों तथा विचारकों की सोच सदा पुरुषों के पक्ष में तथा स्त्रियों के खिलाफ रही है। आज भी दक्षिण भारत के कुछ मंदिर हैं जहाँ महिलाओं का प्रवेश निषेध है। सच पूछा जाये तो भारत में महिला के तौर पर जन्म लेना न माफ किये जाने लायक जुर्म है। लड़की चाहे चार बेटों से पहले हो या चार बेटों के बाद जन्म ले, मातम का कारण होती है। अल्ट्रासाऊंड की मशीनों के चलाने वालों का काम कन्या-भ्रूण हत्या के आधार पर ही तो धड़ल्ले से चल रहा है। हमारे देश के लोग कन्या के पैदा होने पर 'लक्ष्मी आई है' नवरात्रों में कंजक पूजन या रक्षा बंधन पर भाई की सूनी कलाई पर राखी बाँधने के तौर पर महिला गुणगान के चाहे सौ पाखण्ड कर लें, परन्तु वास्तविकता यही है कि आज तक सभी बड़े-बूढ़े दुल्हन को 'दूधों नहाओ-पूतों फलो' का आशीर्वाद ही देते आये हैं। 'प्यारी-प्यारी बेटी' के पैदा होने के आर्शीवाद को देने के बदले में तो वे उसकी कोख के सूना होने की बात ज्यादा पसंद करेंगे। तभी तो भारत में खतरनाक तरीके से लिंग अनुपात महिलाओं के खिलाफ होता जा रहा है। पता नहीं लोग कन्या-भ्रूण हत्या तथा महिलाओं के खिलाफ अपराध करते समय परमात्मा से क्यों नहीं डरते? सारे विश्व में अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा परम्परा की डींगें हाँकने वाले भारत में महिलाओं की स्थिति शोचनीय है। परिवार में शिक्षा, परवरिश तथा आजादी के मामले में बेटे के मुकाबले में बेटियों के खिलाफ पक्षपात किया जाता है। किसी भी महत्वपूर्ण मामले में स्त्रियों का कोई योगदान नहीं होता। परिवार में बात-बात पर उनकी उपेक्षा, तिरस्कार तथा अवहेलना एक आम बात है। महिलाओं के खिलाफ बलात्कार, अपहरण, आर्थिक शोषण तथा भेदभाव बदस्तूर जारी है। हमारे यहाँ खानदान चलाने में पुरुष का नाम चलता है, स्त्री का कहीं भी जिक्र नहीं होता। घोड़ी पर बैठकर दूल्हा महिला को जब ब्याह कर ले जाता है तो वह सिर्फ उसकी श्रेष्ठता को प्रदर्शित करने की सदियों पुरानी परम्परा का द्योतक मात्र ही है। सरकार महिला संरक्षण कानून, वूमैन सैल आदि स्थापित करके स्त्रियों के हितों की रक्षा के जितने नाटक कर ले लेकिन कटु सत्य यही है कि स्त्री का स्थान पुरुष के बाद ही आता है अन्यथा स्त्रियों का जिस तरह टी.वी. सीरियलों, प्रतिभा-खोज, विज्ञापनों, फिल्मों आदि में न्यूनतम वस्त्रों या लगभग नग्नावस्था में दिखाकर तिरस्कार किया जाता है वह हम सभी के लिए शर्म से डूब मरने की बात है। लेकिन नहीं, आजकल यह विकसित सभ्यता का एक महत्वपूर्ण अंग बनता जा रहा है। महिला दिवस मनाने के नाम पर मीडिया- टी.वी. चैनलों पर बड़े-बड़े नेताओं के लच्छेदार भाषणों से युक्त कार्यक्रम प्रदर्शित किये जाते हैं लेकिन विडंबना यह है कि भारत जैसे देश में लगभग ६० प्रतिशत महिलाओं की अपने क्रूर पति परमेश्वरों द्वारा पिटाई होती है। कहीं दहेज के नाम पर उनको जला दिया जाता है या वे आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाती हैं। जहाँ कार्यालयों, शिक्षा संस्थानों आदि में उनका यौन-शोषण होता है वहाँ उनकी अपने घरों में ही उनके जन्मदाता पिता या ससुराल में उनके ससुर, देवर या जेठ भी उनकी इज्जत आबरू को तार-तार करने में लगे हैं। पुराने समयों की तरह इक्कीसवीं सदी के भारत में महिलाओं का पशु-पक्षियों की तरह खरीदा तथा बेचा जाना जारी है। मैं समझता हूँ कि संसार के अन्य देशों को तो छोड़िए भारत जैसे देश में महिला होना एक गुनाह है। बेचारी महिला जाये तो कहाँ जाये? करे तो क्या करे? पैदा होने पर पिता के नियन्त्रण में रहती है, जवान होने पर पति उस पर हुक्म चलाता है, बूढ़ा होने पर वह बेटों की गुलामी सहती है? ऐसे में अगर सृष्टि-चक्र चलाने वाला विधाता उसे मिल जाये तो वह उससे यह प्रश्न जरूर पूछेगी, 'मुझे क्यों पैदा किया?' इस समय समाज में महिलाओं की इज्जत, आबरू तथा सुरक्षा के गिरते ग्राफ को ठीक करने की परम आवश्यकता है। इसके लिए समाज में स्त्रियों के प्रति लोगों की सोच में तबदीली करने की जरूरत है तभी ही महिलाऐं समानता, सम्मान तथा गर्व से जीकर अपने कर्त्तव्यों को पूरा कर सकेंगी। क्या हम महापुरुषों की जननी स्त्री महिला को पर्याप्त सम्मान दे सकने में सक्षम हैं?

मकान नं.९७५-बी/२०,राजीव निवास, शक्ति नगर, ग्रीन रोड
रोहतक-१२४००१,हरियाणा

❑❑❑

स्वस्थ कौन

स्वस्थ का अर्थ होता है 'स्व' में स्थित हो जाना। अर्थात् स्वयं पर स्वयं का नियन्त्रण, पूर्ण अनुशासन एवं रोग-मुक्त जीवन। स्वास्थ्य का अर्थ होता है-विकारमुक्त अवस्था। रोग का तात्पर्य विकारयुक्त अवस्था यानी जितने ज्यादा विकार उतने ज्यादा रोग। जितने विकार कम उतना ही स्वास्थ्य अच्छा। विकार का मतलब अनुपयोगी, अनावश्यक, व्यर्थ, विजातीय तत्त्व होता है। जब ये विकार शरीर में होते हैं तो शरीर रोगी बन जाता है परन्तु जब ये विकार मन, भावों और आत्मा में होते हैं तो क्रमशः मन, भाव और आत्मा विकारी अथवा अस्वस्थ कहलाती हैं। विकारी अवस्था का मतलब है विभाव दशा अथवा विपरीत स्थिति। जितने-जितने विकार, उतनी-उतनी विभाव दशा।

स्वस्थता तन, मन और आत्मोत्साह के समन्वय का नाम है। जब शरीर, मन, इन्द्रियाँ और आत्मा ताल-से-ताल मिला कर सन्तुलन से कार्य करते हैं, तब ही अच्छा स्वास्थ्य कहलाता है। इस स्थिति में जब शरीर की समस्त प्रणालियाँ एवं सभी अवयव स्वतन्त्रतापूर्वक अपना-अपना कार्य करें, किसी के भी कार्य में, किसी भी प्रकार का अवरोध, आलस्य अथवा निष्क्रियता न हो तथा न उनको चलाने हेतु किसी बाह्य दवा अथवा उपकरणों की आवश्यकता पड़े। मन और पाँचों इन्द्रियाँ सशक्त हों, स्मरण शक्ति अच्छी हो, क्षमताओं का ज्ञान हो, विवेक जागृत हो, लक्ष्य सही और विकासोन्मुख हो। जीवन स्थायी आनन्द, शान्ति, प्रसन्नता बढ़ाने वाला हो, न कि तनाव, चिन्ता, निराशा, भय, अनैतिकता, हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार, तृष्णा आदि दुःख के कारणों को बढ़ाने वाला हो, प्राथमिकताएँ सही हों एवं उसके अनुरूप संयमित, नियमित, नियन्त्रित जीवन-चर्या हो। आवश्यक की क्रियान्विति और अनावश्यक की उपेक्षा का स्वविवेक हो, मन का चिन्तन और आचरण सम्यक् एवं संयमित हो, मन में बेचैनी न हो, इन्द्रियों की विषय-विकारों में आसक्ति न हो, समस्त प्रवृत्तियाँ सहज और स्वाभाविक हों, अस्वाभाविक न हों अर्थात् जिसका पाचन और श्वसन बराबर हो, सन्तुलित हो, अनुपयोगी, अनावश्यक विजातीय तत्त्वों का शरीर से विसर्जन सही हो, भूख प्राकृतिक लगती हो, निद्रा स्वाभाविक आती हो,पसीना गन्ध-हीन हो, त्वचा मुलायम हो, बदन गठीला हो। सीधी कमर, खिला हुआ चेहरा और आँखों में तेज हो। नाड़ी, मज्जा, अस्थि, प्रजनन, लसिका, रक्त परिभ्रमण आदि तंत्र शक्तिशाली हों तथा अपना कार्य पूर्ण क्षमता से करने में सक्षम हों। जो निस्पृही तथा निरहंकारी हो। जो आत्म-विश्वासी, दृढ़ मनोबली, सहनशील, धैर्यवान, निर्भय, साहसी और जीवन के प्रति उत्साही हो। जिसके सभी कार्य समय पर होते हों तथा जीवन नियमबद्ध हो। जो पूर्ण स्वस्थ एवं संतुलित होता है, उसके शरीर से स्वाभाविक सुगंध आती है। स्वास्थ्य, मन, वचन और काया के संतुलित समन्वय का नाम है, जो ऐसी वस्तु नहीं है जिसे बाजार से खरीदा जा सके अथवा किसी से उधार लिया जा सके, या चुराया जा सके।

आत्मा के बिना न तो शरीर का अस्तित्व होता है, न मन व वाणी ही चेतना की अभिव्यक्ति के माध्यम होते हैं। अतः जब तक आत्मा अपनी शुद्धावस्था को प्राप्त नहीं होती है, हम किसी न किसी रोग से अवश्य पीड़ित होते हैं अर्थात् निरोग नहीं बन सकते। शारीरिक रूप से यदि शरीर तंत्र अपने लिये आवश्यक एवं वाछिंत तत्त्वों का पुनःनिर्माण तथा अवांछित और विजातीय तत्त्वों का निष्कासन का कार्य सुचारू रूप से करता रहे तो मनुष्य निरोग एवं स्वस्थ रहकर दीर्घायु प्राप्त कर सकता है।

वास्तव में पूर्ण स्वस्थता के मापदण्ड तो यही होते हैं। जितने-जितने अंशों में उपरोक्त तथ्यों की प्राप्ति होती है उसी अनुपात में व्यक्ति स्वस्थ होता है। इसके विपरीत स्थिति पैदा होने पर अपने आपको स्वस्थ मानना अथवा पूर्ण स्वस्थ बनाने का दावा करना न्याय संगत नहीं माना जा सकता। प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं की स्थिति का अवश्य आंकलन करना चाहिए। जो-जो बातें उसके स्वयं के नियन्त्रण में होती हैं, उसके अनुरूप अपनी जीवनशैली बनाने का प्रयास करना चाहिए।

जीवन में सभी को सदैव सभी प्रकार की अनुकूलताएँ प्रायः नहीं मिलती परन्तु अधिकांश प्रतिकूल परिस्थितियों को सकारात्मक चिन्तन, मनन एवं सम्यक् आचरण द्वारा अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, यही स्वास्थ्य का मूल सिद्धान्त और स्वस्थ जीवन की आधारशिला होती है।

- Dr C.M.Chardia, Jodhpur

□□□

पर्वत भंजक

कथा सरित

हम में से कुछ लोग यह कामना करते हैं कि काश वे कोई और होते, फर्क होते.....यदि मैंने वह किया होता, काश मैं वह होता, एक दिन जब मैं......मुझे सन्तुष्टि होगी, आनंद होगा, परितृप्ति होगी।

एक बार की बात है, एक बूढ़ा आदमी था, जिसका काम था पहाड़ से पत्थर तोड़ना और उनकी बजरी बनाना जिनसे सड़कों का निर्माण होता। वह हर दिन चिलचिलाती धूप में घंटों परिश्रम करता, उन चट्टानों को तोड़ता-कूटता। एक दिन उस देश का राजा उस ओर से निकला जहाँ वह गरीब आदमी काम कर रहा था। वह एक खूबसूरत घोड़े पर सवार था और राजसी वस्त्राभूषण पहने था। पत्थर तोड़ते-कूटते उस आदमी ने सोचाः

'काश मैं राजा होता तो, मेरे पास कितनी ताकत होती! मैं अपने राज्य में घोड़े पर सवार होकर निकलता और अपनी प्रजा के लिए कितने ही अच्छे काम करता........'

सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने उसके विचारों को सुना और उसे राजा बना दिया। अब वह राजा की हैसियत से घोड़े पर सवार होकर, अपने पद के अनुसार बढ़िया वस्त्र पहनकर अपने राज्य में घूमता और अपनी प्रजा को अपनी कृपा और दान से मालामाल करता। किन्तु धूप बहुत तेज होती और राजा को घुटन होती।

राजा ने सोचा, 'काश, मैं सूरज होता तो, मेरे पास कितनी ताकत होती! मैं लोगों को प्रकाश देता और अपार आशीषों का स्रोत होता.....'

सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने उसके विचारों को सुना और उसे सूरज बना दिया। अब सूरज बनकर, वह सुबह से शाम तक हरेक को प्रकाश देता और अपनी हितकारी उष्णता बिखेरता। किन्तु एक बादल आसमान में आया और उसने सूरज को छिपा दिया, और धरती के मुखमंडल को एक छाया ने ढक लिया।

'अरे , नहीं! सूरज भी इतना शक्तिशाली नहीं है,' सूरज ने कहा। 'काश मैं बादल होता तो, मेरे पास कितनी ताकत होती! मैं वर्षा या धूप का चयन करता, और मैं लोगों के लिए अपार आशीषों का स्रोत होता....'

और सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने उसके ये शब्द सुने और उसे एक बड़ा और भारी बादल बना दिया। वह सही समय पर वर्षा करता और किसानों की भरपूर पैदावार होती। किन्तु एक दिन, उसे यह भान हुआ कि वह पर्वत के पार नहीं जा सकता, क्योंकि यह बहुत ऊँचा था।

बादल विलाप करने लगा कि 'बादल भी इतने शक्तिशाली नहीं होते।' उसने सोचा, पर्वत अधिक शक्तिशाली हैं। काश मैं एक पहाड़ होता तो, मेरी छाया लोगों के लिए सुखद होती और मैं तेज हवाओं से उन्हें बचाता, उनकी रक्षा करता.....'

उसके यह शब्द सुनकर, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने उसे एक पहाड़ बना दिया। और पहाड़ को बड़ा गर्व हुआ। किन्तु जब उसने पैरों पर दृष्टिपात किया तो, उसने क्या देखा? एक बूढ़ा आदमी जो अपने पत्थरों के टुकड़े काटकर उनसे बजरी बना रहा था जिससे सड़कें बननी थीं......'

❑❑❑

साभार- {१०१ देश- विदेश की बोध कथाएँ}

नवलखा महल में नवनिर्मित "आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा" एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

- आज मेरे गुरुवर पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम से स्थापित इस न्यास की गतिविधियों को देख हृदय प्रफुल्लित हुआ। सभी उपक्रम उत्कृष्टता लिये हुए हैं। चित्रदीर्घा की सुन्दरता व मोहकता ने मन को मोह लिया। कई चित्र सजीव से जान पड़ते हैं। सत्यार्थप्रकाश के प्रत्येक समुल्लास पर आधारित स्वचालित स्तम्भ को देखने से तो आँखों से अश्रु बह चले। ऐसे सुन्दरतम प्रयास के लिए प्रिय अशोक जी व सभी सम्बद्ध को हार्दिक बधाई एवं शुभकामना।

सज्जनसिंह कोठारी, लोकायुक्त, राजस्थान

सत्यार्थ-पीयूष

महर्षि का राजधर्म

महर्षि दयानन्द सरस्वती उन्नीसवीं सदी के भारतीय नवजागरण के अग्रणी महापुरुष ही नहीं, बल्कि आर्ष प्रज्ञा के धनी, वेद-मर्मज्ञ, समाज सुधारक एवं राष्ट्रवादी क्रान्तिकारी विचारों के प्रणेता थे। इतना ही नहीं उन्होंने वैदिक संस्कृति एवं वाङ्मय का गहन अनुशीलन व स्वाध्याय कर मानवोयोगी लगभग सभी विद्याओं, शास्त्रों पर अपना आर्ष अभिमत व्यक्त किया है। वे विश्व-गुरु के पद पर निर्विवाद रूप से अभिषिक्त किये जाने योग्य हैं। वे भारतीय मनीषा के प्रखर आलोक एवं आधुनिक राष्ट्रवाद के जनक हैं। उनकी ऊर्जस्वित विचारधारा ने भारतीय जनमानस व समाज को धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक संचेतना प्रदान की। भारतीय स्वतंत्रता व राष्ट्रवाद की अभ्यर्चना का प्रथम दीप जलाने वाले राष्ट्रवादी महर्षि दयानन्द स्वराज्य, स्वभाषा, स्वसंस्कृति के प्रबल समर्थक थे। उनके राष्ट्रधर्म की अवधारणा 'इडा **सरस्वती मही त्रिस्तोर्देवी मयो** भुवः' की पूर्णता से युक्त है। महर्षि दयानन्द राजनीति के दार्शनिक व राजधर्म के महान् चिन्तक हैं। उन्होंने आधुनिक राजनीतिविदों और देश के नेताओं को दूर तक प्रभावित किया। महर्षि के राजनैतिक सिद्धान्त उनकी मौलिक चिन्तन एवं दूरदर्शिता पर आधारित थे। पराधीनता के काल में जब प्रजातन्त्र व स्वराज्य की अवधारणा पूर्णतः विकसित नहीं हुई थी, उस समय उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से देशवासियों को धर्म, संस्कृति, स्वराज्य, चक्रवर्ती साम्राज्य व पूर्ण राजनीति का ज्ञान कराया। भारतीय विचारकों के इतिहास में उनका अद्वितीय स्थान है। वस्तुतः वे आधुनिक भारत के स्मृतिकार थे। वे सम्भवतः प्रथम भारतीय विचारक हैं जिन्होंने धार्मिक, सामाजिक सुधार की पूर्ण योजना के साथ राजनीति, प्रशासन, प्रजातन्त्र, न्याय व्यवस्था, प्रशासकों की अर्हता आदि विषयों पर प्रगतिशील व सामयिक विचार दिये। यद्यपि उनके विचारों का स्रोत्र वेद, मनुस्मृति, विदुरनीति, शुक्रनीति आदि ग्रन्थ ही हैं परन्तु उनके निर्वचन में उनकी योगजन्य अप्रतिम मेधा का प्रस्फुटन हुआ है। उनके राजनीति सम्बन्धी चिन्तन उनके द्वारा प्रणीत ग्रन्थों-यथा सत्यार्थप्रकाश, वेदभाष्य, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि में मिलते हैं।

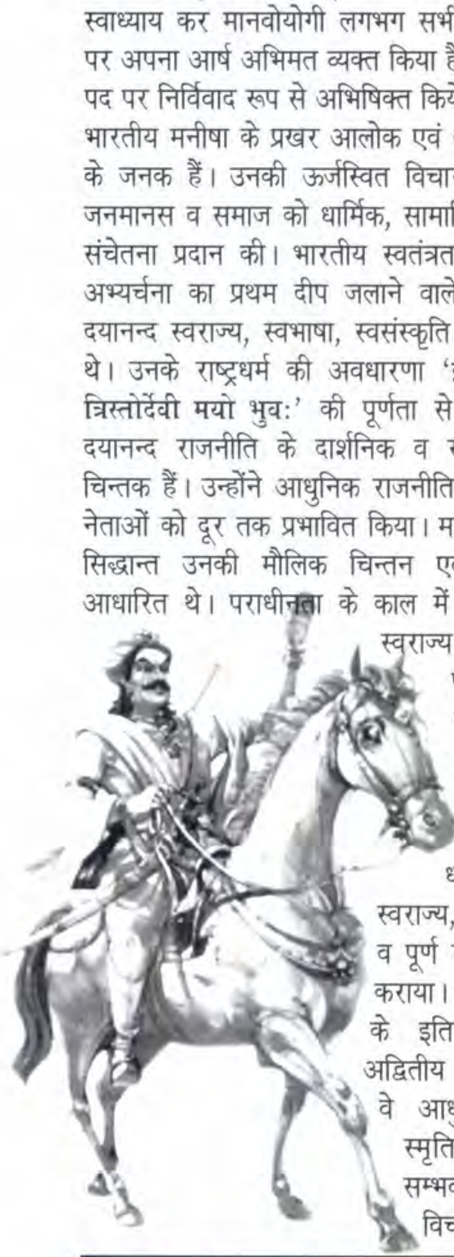

महर्षि दयानन्द अपने गहन अध्ययन से इन तथ्यों से पूर्णतः अवगत थे कि वैदिक आर्यों में राजा-प्रजा का व्यवहार आदि काल से चला आया है। आर्य संस्कृति ही विश्व की आदि संस्कृति है। '**सा प्रथमा संस्कृतिविश्व वारा**- {वेद}। आर्यों का विश्व में चक्रवर्ती साम्राज्य था तथा वे पूर्ण राजनीति के ज्ञाता व पालक थे। वस्तुतः भारतीय संस्कृति में राजधर्म एक मुख्य अंग है। महाभारत के अनुसार-

सर्वे विद्या राजधर्मेषु युक्ता।

सर्वे लोकाः राजधर्मे प्रतिष्ठा, सर्वे धर्मा राजधर्म प्रधानाः।

अर्थात् धर्म के सब तत्त्वों में राजधर्म सबसे बड़ा है क्योंकि नागरिकों की सुरक्षा राजधर्म ही करता है। '**राजा कालस्य कारणम्**' तथा '**यथा राजा तथा प्रजा**' जैसी सूक्तियाँ हमारी संस्कृति के चिर परिचित सिद्धान्त हैं। हमारे आर्ष ऋषियों के ग्रन्थ- मनुस्मृति, शुक्रनीति, विदुरनीति, महाभारत, रामायण, कौटिल्य का अर्थशास्त्र आदि इसके प्रमाण हैं। महर्षि का प्रबल विश्वास है कि वेदों में जहाँ नाना विद्याओं, विज्ञानों का मूल तत्त्व विद्यमान है, वहीं राजधर्म, राष्ट्र, प्रजा का पालन, सैन्य संगठन एवं संचालन, न्याय प्रक्रिया व प्रबंधन का भी मूल मिलता है। महर्षि मनु का प्रमाण दृष्टव्य है-

सैन्यापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।

सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।।

अर्थात् सेना का नेतृत्व, राजव्यवस्था का प्रबंधन, दण्ड विधान तथा सर्वलोकाधिपत्य अर्थात् विश्व प्रबंधन (World management) प्रभृति विधाएँ वेद से ही निःसृत हुई हैं।

□□□

सम्पादक- अशोक आर्य

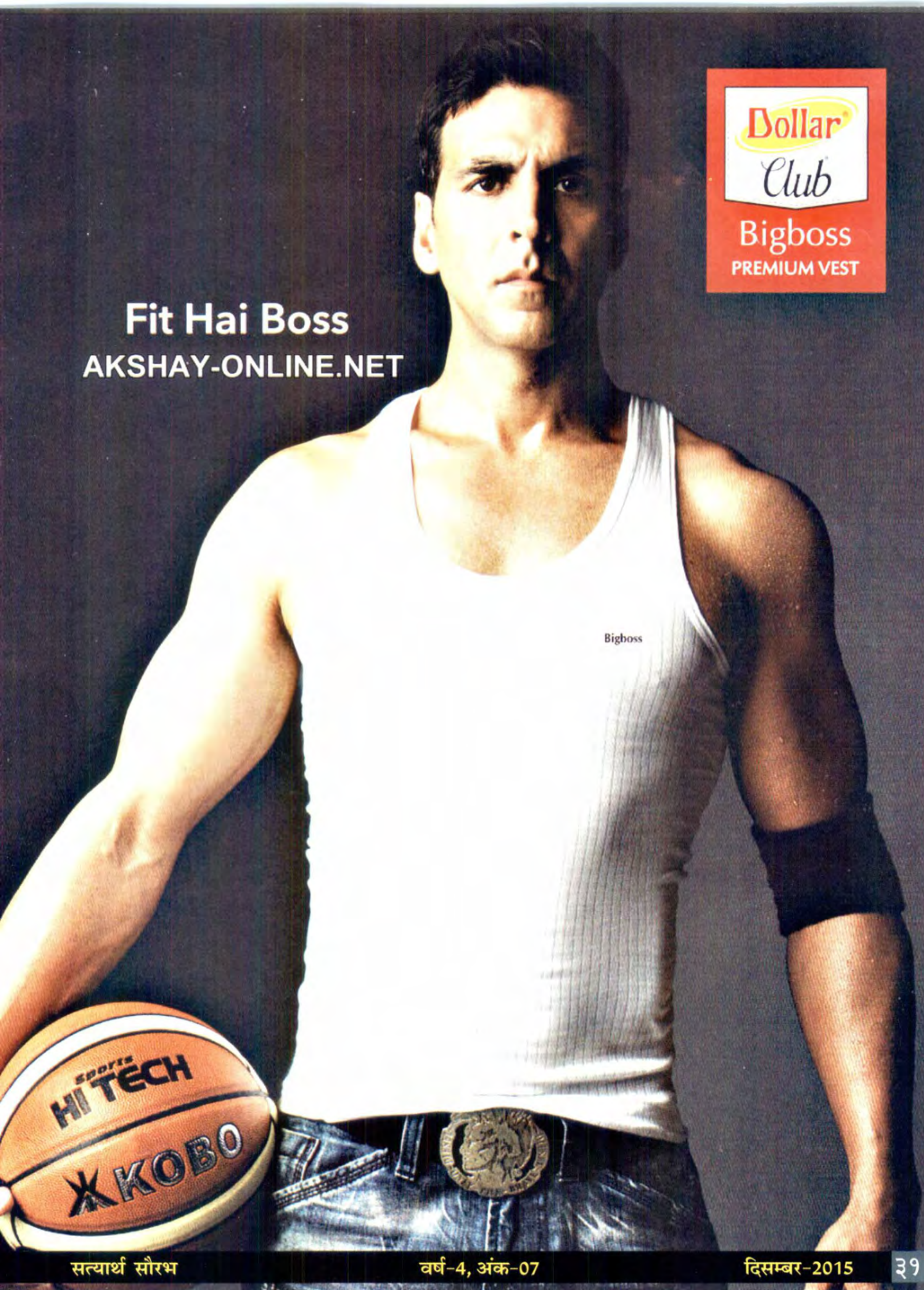
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
AKSHAY-ONLINE.NET
Bigboss
Sports
HI TECH
KOBO

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 December-2015 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

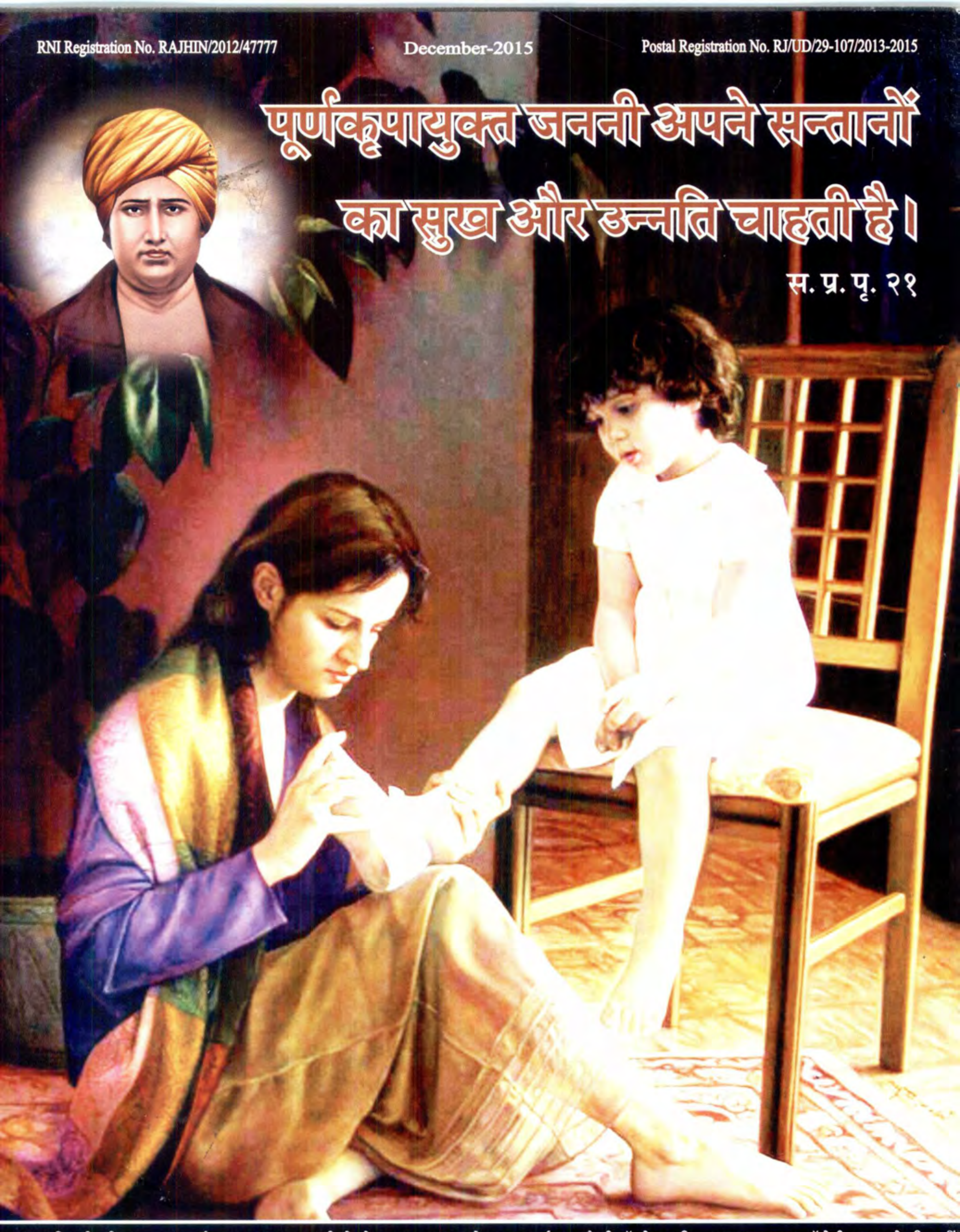

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक– प्रत्येक माह की ३ तारीख	प्रेषण दिनांक– प्रत्येक माह की ७ तारीख	प्रेषण कार्यालय– शास्त्री सर्कल, पोस्ट ऑफिस, उदयपुर

COPL/2412